A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 30 जनवरी, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 150, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

यूजीसी के नये नियम पर विवाद क्यों? कुछ जरूरी सवाल...

पंकज पराशर

यूजीसी के नए नियमों को लेकर देशभर में विवाद क्यों हो रहा है? आरक्षण, नियुक्ति और स्वायत्तता से जुड़े वे कौन-से ज़रूरी सवाल हैं जिनके जवाब अब भी बाकी हैं? जनवरी 2026 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा जारी किया गया 'उच्च शिक्षा संस्थानों में 'समता संवर्धन हेतु विनियमन, 2026' पहली नज़र में एक सकारात्मक और जरूरी पहल के रूप में सामने आता है। इस विनियमन की प्रस्तावना में कहा गया है कि आयोग धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म-स्थान और दिव्यांगता के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन किसी भी नीति या नियम को केवल उसके घोषित उद्देश्य से नहीं, बल्कि उसके वास्तविक स्वरूप, भाषा और क्रियान्वयन की संरचना से समझा जाना चाहिए। जब हम इस विनियमन को ध्यान से पढ़ने पर कुछ ऐसे प्रश्न उभरते हैं जो भावनात्मक नहीं, बल्कि बुनियादी और व्यावहारिक हैं। सबसे पहले 'समता' और 'भेदभाव' की अवधारणा पर ध्यान जाता है।

विनियमन में भेदभाव की परिभाषा बहुत व्यापक है। इसमें धर्म, जाति, लिंग, जन्म-स्थान, दिव्यांगता आदि के आधार पर किसी भी हितधारक के साथ किया गया अनुचित या पक्षपातपूर्ण व्यवहार भेदभाव माना जाएगा। यहाँ 'किसी भी हितधारक' शब्द महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे यह आभास मिलता है कि नियम सभी के लिए समान रूप से लागू होगा, लेकिन उसी दस्तावेज़ में आगे भाषा बदलती हुई दिखाई देती है।

वहाँ बार-बार यह स्पष्ट किया जाता है कि यह विनियमन विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़े वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और दिव्यांगजनों के विरुद्ध होने वाले भेदभाव को समाप्त करने के लिए बनाया गया है। यहाँ एक सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण अंतर उभरता है। परिभाषा सबको शामिल करती है, पर उद्देश्य कुछ निश्चित वर्गों पर केंद्रित हो जाता है। यह अंतर अपने आप में किसी निष्कर्ष की ओर नहीं ले जाता, लेकिन यह संकेत अवश्य देता है कि 'समता' को देखने का दृष्टिकोण सार्वभौमिक न होकर समूह-विशेष पर आधारित है। यहीं से विनियमन की पूरी संरचना को समझने की ज़रूरत पैदा होती है।

विनियमन के तहत हर उच्च शिक्षा संस्थान में 'समान अवसर केंद्र' स्थापित करना अनिवार्य किया गया है। इस केंद्र के कार्यों की सूची पढ़ने पर स्पष्ट होता है कि उसका मुख्य दायित्व 'वंचित समूहों' से संबंधित नीतियों की निगरानी, उनके लिए सहायता और संसाधनों का समन्वय तथा परिसर में विविधता को बढ़ावा देना है। यह उद्देश्य अपने आप में अनुचित नहीं है। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है, जब पूरे संस्थागत ढाँचे का केंद्र बिंदु केवल 'वंचित समूह' बन जाता है, जबकि उच्च शिक्षा संस्थान स्वयं अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत पृष्ठभूमियों से आने वाले लोगों का साझा स्थान होते हैं।

विनियमन में कहीं यह स्पष्ट नहीं किया गया कि यदि कोई व्यक्ति या छात्र किसी अन्य आधार पर स्वयं को भेदभाव का शिकार मानता है, तो उसकी स्थिति को उसी संवेदनशीलता से कैसे देखा जाएगा। इस केंद्र के अंतर्गत गठित की जाने वाली 'समता समिति' पर दृष्टि डालने से ये प्रश्न और गहरे हो जाते हैं। समिति की संरचना तय करते हुए यह अनिवार्य किया गया है कि उसमें अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, दिव्यांगजन और महिलाओं का प्रतिनिधित्व होगा। समिति वही संस्था है जो भेदभाव की शिकायतों की जाँच करती है, तथ्यों का आकलन करती है और रिपोर्ट प्रस्तुत करती है।

यहाँ सवाल प्रतिनिधित्व के विरोध का नहीं है। सवाल यह है कि जब कोई समिति जाँच और निर्णय की भूमिका में हो, तो क्या उसकी संरचना ऐसी नहीं होनी चाहिए जिससे सभी पक्षों को उसके निष्पक्ष होने का भरोसा हो?

जब प्रतिनिधित्व का सिद्धांत केवल कुछ निश्चित समूहों तक सीमित कर दिया जाता है, तो यह आशंका स्वाभाविक है कि समिति को एक विशेष सामाजिक दृष्टिकोण से देखा जाने लगे। समिति को यह अधिकार दिया गया है कि वह 'भेदभाव माने जाने वाले कृत्यों की एक उदाहरणात्मक सूची' तैयार करे। यहाँ 'उदाहरणात्मक' शब्द बहुत कुछ कह जाता है। इसका अर्थ है कि सूची सीमित नहीं होगी और उसके बाहर के व्यवहार भी भेदभाव की श्रेणी में आ सकते हैं। इससे भेदभाव की परिभाषा एक स्थिर नियम न रहकर परिस्थितियों और व्याख्या पर निर्भर हो जाती है। शैक्षणिक परिसरों में विचार, मतभेद और विमर्श स्वाभाविक होते हैं। यदि यह स्पष्ट न हो कि कौन-सा व्यवहार स्वीकार्य है और कौन-सा नहीं, तो असमंजस और असुरक्षा का माहौल बन सकता है। कोई भी व्यवस्था जो अस्पष्ट शब्दों और व्यापक विवेकाधिकार पर आधारित हो, वह अनजाने में ही असंतुलन पैदा कर सकती है।

विनियमन के अनुसार कोई भी शिकायत ऑनलाइन, लिखित रूप में या हेल्पलाइन के माध्यम से की जा सकती है। समिति को 24 घंटे के भीतर बैठक करनी होती है और सीमित समय में रिपोर्ट देनी होती है। त्वरित कार्रवाई का उद्देश्य पीड़ित को राहत देना है, लेकिन यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या इस प्रक्रिया में सभी पक्षों को अपनी बात रखने का पर्याप्त अवसर मिलता है, और क्या जल्दबाजी में निष्कर्ष तक पहुँचने का जोखिम नहीं है।

ऐसे में यह अपेक्षा की जाती है कि उल्लंघन और दंड के बीच संतुलन और अनुपात स्पष्ट रूप से परिभाषित हो, ताकि भय या अति-सावधानी के कारण शैक्षणिक निर्णय प्रभावित न हों। समता केवल संरक्षण से नहीं आती, बल्कि विश्वास, पारदर्शिता और संतुलन से जन्म लेती है। यदि किसी व्यवस्था से यह संतुलन डगमगाता हुआ महसूस हो, तो उस पर प्रश्न उठाना न तो असंवैधानिक है और न ही असामाजिक।

यूजीसी का यह समता विनियमन एक प्रशासनिक आदेश भर नहीं है, बल्कि वह उच्च शिक्षा के दैनिक व्यवहार को आकार देने की क्षमता रखता है। इस विनियमन को पढ़ते हुए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह उभरता है कि 'समता' को यहाँ किस तरह समझा और लागू किया जा रहा है। विश्वविद्यालय केवल सामाजिक न्याय की प्रयोगशाला नहीं होते। वे ज्ञान, तर्क, बहस और असहमति के भी स्थान होते हैं। यदि कोई व्यवस्था इस तरह विकसित हो जाए कि उसमें हर संवाद, हर असहमति और हर निर्णय को 'भेदभाव' के चश्मे से देखा जाने लगे, तो शैक्षणिक स्वतंत्रता पर उसका प्रभाव पड़ना तय है। विनियमन के अंतर्गत गठित 'समता समूह' और 'समता दूत' जैसी व्यवस्थाएँ इसी संदर्भ में ध्यान खींचती हैं। इस पूरे ढाँचे में 'समता' को लगभग पूरी तरह प्रशासनिक और निगरानी-आधारित प्रक्रिया बना दिया गया है। विनियमन में सामान्य श्रेणी या गैर-परिभाषित समूहों के संदर्भ में कोई स्पष्ट विमर्श नहीं है। इस विनियमन को अंतिम समाधान नहीं, बल्कि एक जीवित दस्तावेज़ माना जाए–जिसे अनुभव, संवाद और आलोचनात्मक विचार के आधार पर लगातार परिष्कृत किया जा सके।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

शरद की सुबह

मेरे लौटने और तुम्हारे जाने के बाद
दुनिया बहुत आगे बढ़ गई.
एक नदी बदल गई.
कुछ फूल खिल गए.
परिक्रमा में मगन रही पृथ्वी.

जो शेष रहा उसमें ठहर
गईं असंख्य स्मृतियां..!
तुम्हारे चेहरे पर पड़ा धूप का टुकड़ा.
अंजुरी भर हंसी.
आंखों में ठहरी उदास शाम.
तुम्हारी थोड़ी सी हंसी.
इन दिनों यही है मेरे पास
दुनिया में मिलना जुलना होता है.
लेकिन
यह समय अब स्मृतियों में होगा.
तुम और मैं भी
और थोड़ा सा शेष..!

– सारंग उपाध्याय

यूजीसी के नए नियमों पर सुप्रीम कोर्ट की रोक

● केंद्र को नया ड्राफ्ट तैयार करने के निर्देश, देशभर में नियमों का हो रहा था विरोध

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (यूजीसी) के नए नियमों पर अगले आदेश तक रोक लगा दी है। सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या की बेंच ने कहा कि इसके प्रावधान स्पष्ट नहीं हैं और इनका गलत इस्तेमाल हो सकता है।

कोर्ट ने यह टिप्पणी उन याचिकाओं पर की है, जिनमें आरोप लगाया गया है कि नए नियम जनरल कैटेगरी के छात्रों के साथ भेदभाव करते हैं। यूजीसी ने 13 जनवरी को अपने नए नियमों को नोटिफाई किया था। इनका देशभर में विरोध हो रहा है।

अब सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और जीसी को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। साथ ही नियमों का ड्राफ्ट फिर से तैयार करने का निर्देश दिया। कोर्ट ने कहा कि इस मामले में अगली सुनवाई अब 19 मार्च को होगी।

यूजीसी के नए कानून का नाम है- 'प्रमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन रेगुलेशन्स, 2026।' इसके तहत कॉलेजों और यूनिवर्सिटी में एससी, एसटी और ओबीसी छात्रों के खिलाफ जातीय भेदभाव रोकने के लिए कई निर्देश दिए गए थे।

नए नियमों के तहत, कॉलेजों और यूनिवर्सिटी में विशेष समितियां, हेल्पलाइन और मॉनिटरिंग टीमें बनाने का निर्देश दिया गया। ये टीमें एससी,एसटी और ओबीसी छात्रों की शिकायतों को देखेंगी। सरकार का कहना है कि ये बदलाव उच्च शिक्षा संस्थानों में निष्पक्षता और जवाबदेही लाने के लिए किए गए हैं।

राजकीय सम्मान के साथ हुआ अजित 'दादा' का अंतिम संस्कार

● पत्नी ने गंगाजल चढ़ाया, बेटों ने मुखाग्नि दी, गन सैल्यूट दिया गया, अमित शाह और शरद पवार मौजूद रहे

बारामती/मुंबई (एजेंसी)। बारामती के काटेवाड़ी स्थित विद्या प्रतिष्ठान मैदान में गुरुवार को महाराष्ट्र के पूर्व डिप्टी सीएम अजित पवार का अंतिम संस्कार हो गया। उनके दोनों बेटों पार्थ और जय पवार ने मुखाग्नि दी।

पत्नी सुनेत्रा पवार ने पति के पार्थिव शरीर पर गंगाजल चढ़ाकर अंतिम विदाई दी। इस मौके पर चाचा शरद पवार और उनकी बेटी सुप्रिया सुले, गृह मंत्री अमित शाह भी मौजूद रहे।

अंतिम संस्कार में महाराष्ट्र के अलावा दूसरे राज्यों से भी लोग पहुंचे। बारामती में देर रात से लोगों का पहुंचना शुरू हो गया था। सुबह के वक्त कई इलाकों में जाम की स्थिति बन गई।समर्थक बाइक, ट्रैक्टर-ट्रॉली और बस से पहुंचे। अंतिम यात्रा में एक से दो किमी तक तक लोग ही लोग नजर आ रहे थे।

एनसीपी ने सुनेत्रा पवार को चुना अजित पवार का उत्तराधिकारी, डिप्टी सीएम बनाने के लिए सौंपा जाएगा प्रस्ताव

महाराष्ट्र के दिवंगत डिप्टी सीएम अजित पवार की पार्टी ने उत्तराधिकारी के तौर उनकी पत्नी सुनेत्रा पवार का नाम आगे किया है। एनसीपी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल और पार्टी के दिग्गज नेता छगन भुजबल के अनुसार बीजेपी को सुनेत्रा पवार को डिप्टी सीएम बनाने का प्रस्ताव सौंपा जाएगा। सुनेत्रा पवार अभी राज्यसभा की सांसद है।

मंदसौर में अन्नदाता सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने

1.17 लाख किसानों के खातों में अंतरित की 200 करोड़ रूपये की भावांतर राशि

मंदसौर (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 29 जनवरी को मंदसौर जिले के मल्हारगढ़ में आयोजित सोयाबीन भावांतर राशि भुगतान के कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसान और आमजन मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने मंच से किसानों को संबोधित किया और सरकार की योजनाओं की जानकारी दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव कार्यक्रम में चौथी किस्त के रूप में प्रदेश के एक लाख 17 हजार किसानों को 200 करोड़ की भावांतर राशि का भुगतान किया। यह राशि उन किसानों को भुगतान की जाएगी, अब तक प्रदेश के कुल 7 लाख 10 हजार किसानों को 1492 करोड़ रुपए की भावांतर राशि का भुगतान किया जा चुका।

मल्हारगढ़ को दी विकास कार्यों की सौगातें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंदसौर जिले के मल्हारगढ़ में 69.50 करोड़ रूपये के विकास कार्यों की सौगात दी। जिसमें 51.91 करोड़ रुपए की लागत से मंदसौर-नीमच स्टेट हाईवे पर स्थित मल्हारगढ़ 4-लेन फ्लाई-ओवर का भूमि-पूजन, 5.53 करोड़ रुपए की लागत से पिपलिया मंडी समपार रेलवे अंडर ब्रिज का भूमि-पूजन एवं 2.06 करोड़ रुपए की लागत से मल्हारगढ़ रेलवे स्टेशन रोड पर पुल निर्माण कार्य का लोकार्पण किया। इन विकास कार्यों से क्षेत्र में यातायात सुविधा सुदृढ़ होगी तथा आमजन को आवागमन में राहत मिलेगी। इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंदसौर के मल्हारगढ़ में अन्नदाता सम्मान समारोह के शुभारंभ के पहले कन्या पूजन किया।

पार्टी में मतभेदों के बीच थरूर, खड़गे-राहुल से मिले

● कहा- सब साथ मिलकर काम कर रहे, केरल चुनाव की मीटिंग में शामिल नहीं हुए थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस में पार्टी हाईकमान से मतभेद की खबरों के बाद कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने गुरुवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी से मुलाकात की। तीनों के बीच बैठक संसद में खड़गे के कार्यालय में हुई। मुलाकात के बाद थरूर ने कहा कि मेरी पार्टी के दोनों नेताओं से बातचीत हुई। सब ठीक है।

हम सब एक साथ मिलकर काम कर रहे हैं। मैंने हमेशा पार्टी के लिए प्रचार किया है। यह मुलाकात ऐसे समय हुई, जब थरूर और पार्टी लीडरशिप के बीच कुछ मतभेद सामने आए थे। हाल ही में केरल विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर एआईसीसी की एक बैठक हुई थी, जिसमें थरूर शामिल नहीं हुए थे।

वहीं केरल का सीएम बनने के सवाल पर थरूर ने कहा कि मेरी इस बारे में कभी बात नहीं हुई। मुझे किसी भी चीज के लिए उम्मीदवार बनने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

राहुल ने कोच्चि में थरूर को नजरअंदाज किया था

मीडिया सूत्रों के अनुसार 19 जनवरी को कोच्चि में एक कार्यक्रम के दौरान राहुल गांधी ने मंच पर मौजूद कई वरिष्ठ नेताओं का नाम लिया, लेकिन शशि थरूर को नजरअंदाज कर दिया था।थरूर के करीबी सूत्रों के मुताबिक यह घटना उनके लिए टिपिंग पॉइंट साबित हुई। इससे पहले भी राज्य के कुछ नेता उन्हें नजरअंदाज करने की कोशिश कर चुके हैं, जिससे वह असहज महसूस कर रहे थे।

देश का 'आर्थिक रिपोर्ट कार्ड' संसद में पेश

● 56.2 करोड़ लोगों के पास रोजगार का दावा, जीडीपी ग्रोथ 7.2 प्रतिशत तक रहने का अनुमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज 29 जनवरी को देश का 'आर्थिक रिपोर्ट कार्ड' यानी इकोनॉमिक सर्वे लोकसभा में पेश किया। इस सर्वे में बताया गया है वित्त वर्ष 2026-2027 में जीडीपी ग्रोथ 6.8 प्रतिशत से 7.2 प्रतिशत की रेंज में रहने का अनुमान है। इसके अलावा महंगाई, खेती-किसानी की क्या हालत है और क्या आने वाले समय में नई नौकरियां बढ़ेंगी इसकी भी जानकारी सर्वे में दी गई है।वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने लोकसभा में इकोनॉमिक सर्वे 2025-2026 पटल पर रखा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 30 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पहले हुआ लापता, फिर क्रैश कोलंबिया में बड़ा विमान हादसा, सांसद समेत 15 की मौत

कोलंबिया (एजेंसी)। कोलंबिया के पूर्वोत्तर में नॉर्टे डी सैंटेंडर प्रांत के ग्रामीण इलाके में बुधवार को एक दर्दनाक हादसा हुआ जब एक विमान के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से उसमें सवार एक सांसद समेत सभी 15 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। अधिकारियों ने इस हादसे की पुष्टि कर दी है। इस उड़ान का संचालन करने वाली सरकारी विमानन कंपनी 'सटेना' ने एक जारी बयान में कहा कि कुरासिका इलाके के स्थानीय अधिकारियों ने घटनास्थल के बारे में प्रशासन को सूचना दी, जिसके बाद 'यात्रियों की स्थिति का पता' लगाने के लिए एक बचाव दल भेजा गया। विमानन कंपनी के मुताबिक इस विमान में चालक दल के दो सदस्य और सांसद डायोजेनेस किंतेरो समेत 13 यात्री सवार थे।

कर्नाटक में बेंगलुरु जा रही बस में आग लगी

- 10 यात्री जख्मी, कुल 36 लोग सवार थे

बेंगलूर (एजेंसी)। कर्नाटक के होसनगर से बेंगलुरु जा रही एक प्राइवेट बस में गुरुवार सुबह आग लग गई। बस में 36 यात्री सवार थे। इनमें लगभग 10 यात्रियों को मामूली रूप से जख्मी हुए हैं। अब तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। घटना का वीडियो सामने आया है, जिसमें दिखा कि आग ने पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया है। बस से तेज लपटें उठती दिखीं।

सोना एक दिन में 11,486 बढ़कर 1.76 लाख पहुंचा

- चांदी तीन दिन में 68,228 महंगी, 3.86 लाख हुई

नई दिल्ली (एजेंसी)। चांदी-सोने के दाम लगातार चौथे दिन अपने सबसे ऊपरी स्तर पर पहुंच गए हैं। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के अनुसार, 29 जनवरी को 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का

भाव 11,486 रुपए बढ़कर 1,76,121 रुपए पर पहुंच गया है। तीन दिन में सोना 21,811 महंगा हुआ है। वहीं, एक किलो चांदी की कीमत 27,666 रुपए बढ़कर 3,85,933 रुपए किलो पर पहुंच गई है। तीन दिन में चांदी की कीमत 68,228 रुपए महंगी हुई है। इससे पहले शुक्रवार को इसकी कीमत 3,17,705 रुपए किलो थी। इस साल अब तक सिर्फ 29 दिन में ही चांदी 1.55 लाख रुपए और सोना 43 हजार रुपए महंगा हो चुका है।

यूपी से जयपुर जा रही बस के उड़े परखच्चे

- बस-ट्रेलर की टक्कर में 4 की मौत, 5 घायल

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के भरतपुर में स्लीपर बस और ट्रेलर की भीषण टक्कर में मां-बेटे समेत 4 यात्रियों की मौत हो गई। 5 यात्री घायल हो गए। बस उत्तर प्रदेश के कासगंज से जयपुर जा रही थी। इस दौरान सेवर पुल पर खड़े ट्रेलर में घुस गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बस के परखच्चे उड़ गए। बस में फंसे यात्रियों में चीख-पुकार मच गई। एक्सीडेंट सेवर थाना इलाके में आगरा-जयपुर नेशनल हाईवे पर बुधवार देर रात करीब 2 :30 बजे हुआ।

श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का पांचवा दिन आचार्य श्री अशोक कुमार शास्त्री ने कहा

संस्कृति और संस्कारों का पालन करने से जीवन सफल होगा

भोपाल। भगवान की अमृत रूपी वाणी को सुनने से मनुष्य के सभी पापों का नाश होता है। सामाजिक जीवन में यदि आपने संस्कृति और संस्कारों को अपना लिया तो आपका जीवन सफल हो जाएगा। यह उद्गार आचार्य श्री अशोक कुमार शास्त्री शिवाजी नगर स्थित माँ सिद्धेश्वरी दुर्गा मंदिर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के दौरान गुरुवार को श्रीकृष्ण लीला का वर्णन करते हुए वयक्त किए। जैसे ही कथावाचक आचार्य पंडित अशोक शास्त्री ने भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के पश्चात उनकी बाल लीलाओं का वर्णन किया समस्त श्रोता मंत्र मुग्ध हो नाचने लगे। आज की कथा में गोवर्धन पूजा का उल्लेख करते हुए भगवान श्री कृष्ण द्वारा इंद्र के घमंड को तोड़ने की कथा क्रोध अहंकार, लाभ, मोह और मद को त्यागने का संदेश व्यास पीठ से आचार्य श्री शास्त्री ने दिया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश परशुराम कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री विष्णु राजोरिया, मध्य प्रदेश के पूर्व मंत्री पी सी शर्मा, क्षेत्रीय पार्षद गुड्डू चौहान, ब्राह्मण एकता अस्मिता मंच के राकेश चतुर्वेदी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व प्रचारक चेतन भार्गव, भृगु समाज के प्रदेश महासचिव डॉ अनिल भार्गव वायु, बच्चन भार्गव सहित बड़ी संख्या में भक्तों की उपस्थिति ने आयोजन को भक्ति-रस से सराबोर कर दिया। मुख्य आयोजक विनोद तिवारी ने बताया की भागवत कथा 25 जनवरी से लगातार दोपहर 2 से 5 बजे तक आयोजित की जा रही है। 1 फरवरी को निशुल्क यज्ञोपवीत संस्कार और महाप्रसादी वितरण के साथ श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव का समापन होगा।

रीवा विकास के क्षेत्र में ही नहीं कला व संस्कृति के क्षेत्र में भी आगे है : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

चित्रांगन अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म एवं थियेटर फेस्टिबल में हुए शामिल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा विकास के क्षेत्र में ही नहीं कला व संस्कृति के क्षेत्र में भी आगे है। कृष्णा राजकपूर आडिटोरियम कला प्रेमियों के लिए वह स्थल बन गया है जहां महानगरों की तरह ही राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं।

रंग उत्सव नाट्य समिति द्वारा आयोजित चित्रांगन अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म एवं थियेटर फेस्टिबल के शुभारंभ अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि महाभारत सीरियल में कृष्ण की भूमिका निभाने वाले श्री नीतीश भारद्वाज के चर्चित नाटक चक्रव्यूह की प्रस्तुति रीवा के सुधी दर्शकों को अविभूत कर गई और हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हमें यह नाट्य मंचन देखने को मिला। उन्होंने कहा कि श्री भारद्वाज व उनकी टीम द्वारा प्रस्तुत नाटक का मंचन मानस पटल पर चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेगा। उन्होंने कहा कि रीवा के लोग रिश्ते बनाना नहीं रिश्ते निभाना भी जानते हैं जिसका उदाहरण यह राजकपूर आडिटोरियम है जहाँ राजकपूर जी का विवाह हुआ था और अब इस स्थान में भव्य आडिटोरियम कला व संस्कृति प्रेमियों के लिये माध्यम बना है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने आयोजन समिति को बधाई दी। इस अवसर पर श्री भारद्वाज ने कहा कि रंगमच और सिनेमा समाज का दर्पण है। उन्होंने रीवा के सुधी दर्शकों की समझ की सराहना भी की। कार्यक्रम में कुलगुरू माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय श्री विजय मनोजर तिवारी, पूर्व मंत्री श्री पुष्पराज सिंह सहित बड़ी संख्या में कलाप्रेमी एवं दर्शक उपस्थित रहे।

राज्यपाल श्री पटेल के मुख्य आतिथ्य में हुआ गणतंत्र दिवस समारोह का गरिमामयी समापन

ध्वनि, अनुशासन और परंपरा का अनुपम संगम, बीटिंग द रिट्रीट

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल के मुख्य आतिथ्य में मध्यप्रदेश में 77वें गणतंत्र दिवस समारोह का गरिमामयी समापन गुरुवार को ऐतिहासिक 'बीटिंग द रिट्रीट' समारोह के साथ हुआ। जहांगीराबाद स्थित लाल परेड मैदान में इस भव्य समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश पुलिस ब्रास बैंड एवं आर्मी ब्रास बैंड द्वारा राष्ट्र भक्ति, अनुशासन और सांस्कृतिक चेतना से ओत-प्रोत संगीतमय प्रस्तुतियों से संयम, एकरूपता और सैन्य परंपरा की गरिमा को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया। उल्लेखनीय है कि 'बीटिंग द रिट्रीट' सैन्य एवं अर्ध सैनिक बलों की गौरवशाली परंपरा का प्रतीक है। राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली के साथ केवल भोपाल में ही इस ऐतिहासिक समारोह का आयोजन किया जाता है।

इस अवसर पर महापौर श्रीमती मालती राय, मुख्य सूचना आयुक्त श्री विजय यादव, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना, अपर मुख्य सचिव गृह श्री शिव शेखर शुक्ला, महानिरीक्षक पुलिस श्री इरशाद वली, कमांडेंट सातवीं वाहनी श्री हितेश चौधरी सहित आर्मी, पुलिस और प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री पटेल के आगमन पर पुलिस ब्रास बैंड द्वारा स्वागत धुन प्रस्तुत की गई। इसके पश्चात निरीक्षक श्री सुनील कटारे के नेतृत्व में आयोजित ब्रास बैंड कॉन्सर्ट में वंदे-मातरम् से आरंभ होकर, मेरे देश की धरती, पंख होते तो उड़ आती रे, पल-पल दिल के पास, तेरी झलक अशर्फी, ये देश है वीर जवानों का, अजीब दास्तां है ये, ये शाम मस्तानी, संदेशे आते हैं, 'हे अपना दिल तो आवारा' की प्रस्तुति पुलिस बैंड द्वारा दी गई। सदाबहार और आधुनिक गीतों की लोकप्रिय धुनों के अनूठे संगम ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। राष्ट्र भक्ति फ्यूज़न की अंतिम प्रस्तुति पर तालियों की गूंज से आयोजन स्थल उत्साह से भर उठा।

मध्यांतर के बाद पुलिस और आर्मी बैंड की संयुक्त प्रस्तुति ने कार्यक्रम को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की। बैंड डिस्प्ले में मास्ड बैंड, आर्मी ब्रास बैंड और पुलिस ब्रास बैंड ने फेनफेयर, क्विक मार्च और स्लो मार्च पर सटीक तालमेल के साथ मार्च पास्ट किया। रिट्रीट से पूर्व मास्ड बैंड की ड्रम रोल प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केंद्र रही। समारोह के अंतिम चरण में उप निरीक्षक सुश्री सुनीति सिंह के नेतृत्व में महिला टुकड़ी ने ससम्मान राष्ट्रीय ध्वज का अवरोहण किया। सारे जहाँ से अच्छा की मधुर धुन, राष्ट्रगान तथा रंगीन रोशनी और आतिशबाजी के साथ कार्यक्रम का भव्य समापन हुआ।

पशुपतिनाथ लोक का सीएम डॉ.यादव ने किया लोकार्पण

25 करोड़ से बने लोक में शिव परिवार के होंगे दर्शन

मंदसौर(नप्र)। मंदसौर में अष्टमुखी भगवान पशुपतिनाथ मंदिर परिसर में बना भव्य पशुपतिनाथ लोक का गुरुवार को सीएम मोहन यादव लोकार्पण करने पहुंचे थे। सिवना नदी के तट पर यह लोक 25 करोड़ रुपए की लागत से बनकर तैयार हुआ है।

लोक में महाकाल लोक की तर्ज पर शिव परिवार के साथ ही एक बड़ा डमरू भी भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करेगा। यहां कॉरिडोर में गार्डन, सरोवर, भक्ति सामग्री की दुकान, रेस्टोरेंट सहित तमाम सुविधाएं मौजूद हैं।

8 दिसंबर 2022 को मंदसौर गौरव दिवस के मौके पर प्रदेश के तत्कालीन मुखिया शिवराज सिंह चौहान मंदसौर आए थे। इसी दौरान जनप्रतिनिधियों ने महाकाल लोक की तर्ज पर पशुपतिनाथ लोक बनाने का आग्रह किया था। इसके बाद उन्होंने भव्य कॉरिडोर बनाने की घोषणा की थी। 1 साल बाद 6 अक्टूबर 2023 को साधु-संतों की मौजूदगी में कॉरिडोर का भूमि पूजन हुआ। शिवराज वर्चुअली कार्यक्रम में शरीक हुए थे। सिवना नदी के तट पर स्थित यह लोक 15 बीघा क्षेत्र में फैला है। इसका निर्माण राजस्थान के लाल पत्थरों से पारंपरिक नक्काशी कला के साथ किया गया है। लोक में अयोध्या शैली के भव्य प्रवेश द्वार, चार सुव्यवस्थित प्रवेश-निकास मार्ग और शिव लीलाओं पर आधारित विशाल म्यूरल वॉल बनाई गई है।

- एसआईआर पर सुनवाई, याचिकाकर्ता बोले-

चुनाव आयोग मनमानी नहीं कर सकता

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को एसआईआर को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए कहा कि चुनाव आयोग को एसआईआर प्रक्रिया में सभी राज्यों में नियमों का सही ढंग से पालन करना चाहिए। तमिलनाडु में जिन लोगों का नाम स्पेलिंग एरर के चलते काटा गया है। उनकी लिस्ट ग्राम पंचायत भवन, सब-डिवीजन के तालुका ऑफिस और शहरी इलाकों के वार्ड ऑफिस में लगाई जाए। उधर याचिकाकर्ता की तरफ से पेश एडवोकेट प्रशांत भूषण ने दलील दी कि नई वोटर लिस्ट बनाने की कोशिश में महिलाओं के नाम कट रहे हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। गरीब और कमजोर लोगों पर बोझ डाला गया। वोटर को खुद फॉर्म भरने की जिम्मेदारी दी गई है। जो अनपढ़ हैं या प्रवासी हैं वो फॉर्म नहीं भर पा रहे हैं।

चुनाव आयोग मनमानी नहीं कर सकता है। चुनाव अधिकारी यह कैसे तय कर सकता है कि कोई नागरिक है या नहीं? वे कोई अदालत नहीं है। अगर विवाद हो तो जिरह का मौका मिलना चाहिए।

हिमाचल में बर्फबारी

- 889 सड़कें और हजारों बिजली ट्रांसफार्मर ठप
- मप्र, राजस्थान-यूपी और बिहार में बारिश की संभावना

शिमला/भोपाल/जयपुर/श्रीनगर/देहरादून (एजेंसी)। पहाड़ों पर भारी बर्फबारी और बारिश ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। हिमाचल प्रदेश में बुधवार को भारी बर्फबारी के बाद ऊंचाई वाले इलाकों में न्यूनतम तापमान -6 डिग्री से -1 डिग्री के बीच रहा। लाहौल-स्पीति जिले के कुकुमसेरी में सबसे कम -6.1 डिग्री तापमान दर्ज किया गया।

बर्फबारी के कारण हिमाचल में चार नेशनल हाईवे सहित कुल 885 सड़कें और 3 हजार से ज्यादा बिजली ट्रांसफार्मर ठप हैं। पाइपलाइन में पानी जमने से वाटर सप्लाई भी बंद हैं, जिससे हजारों परिवार प्रभावित हुए हैं।

इधर, उत्तराखंड में दो दिनों से लगातार बर्फबारी के बाद आज धूप खिली है। हालांकि, बद्रीनाथ, केदारनाथ और गंगोत्री में सड़कों पर अभी भी 3 से 4 फीट तक बर्फ जमी है। चमोली के औली में लगभग 2 फीट बर्फ गिरी। राज्य में एवलांच का खतरे का अलर्ट जारी किया गया है।पहाड़ों पर बर्फबारी का असर मैदानी राज्यों में भी दिख रहा है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, यूपी, बिहार सहित अन्य राज्यों में फिर से सर्दी और कोहरे का असर बढ़ गया है। यूपी के गोरखपुर में गुरुवार सुबह बारिश हुई। कल अयोध्या-लखनऊ समेत 9 शहरों में बारिश हुई थी।

- योगी कैबिनेट में अहम फैसले

यूपी में टीचर्स-शिक्षामित्र का कैशलेस इलाज होगा

- मेरठ में बांग्लादेशी हिंदू बसाए जाएंगे 11 फरवरी को आएगा बजट

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में माध्यमिक और प्राइमरी स्कूलों के टीचर्स और कर्मचारी अब 5 लाख रुपए तक कैशलेस इलाज करा पाएंगे। माध्यमिक, बेसिक के साथ ही एडेड और सेल्फ फाइनेंस के कर्मचारियों को यह सुविधा मिलेगी। इससे करीब 12 लाख कर्मचारियों को फायदा होगा।

इसके अलावा, मेरठ के मवाना गोसाई में 107 बांग्लादेशी विस्थापित हिंदू परिवार को विस्थापित किया जाएगा। योगी सरकार का बजट सत्र 9 फरवरी से शुरू होगा, 11 फरवरी को बजट पेश किया जाएगा। गुरुवार को योगी कैबिनेट बैठक में कुल 29 प्रस्ताव पास हुए।शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने कहा- बेसिक के 4,34,226 टीचर, एडेड के 13,380 टीचर, सेल्फ फाइनेंस के 4,72,735 टीचर, 1,42,928 शिक्षामित्र, 24,417 अनुदेशक, 7,479 कस्तूरबा गांधी के वार्डन, 97,344 रसोईया, 2,581 विशेष शिक्षक को फायदा मिलेगा।

वहीं, माध्यमिक शिक्षा मंत्री गुलाब देवी ने कहा- 2,97,589 माध्यमिक टीचर्स को भी कैशलेस का फायदा मिलेगा। इस योजना पर सरकार का करीब 420 करोड़ रुपए खर्च आएगा।

योगी सरकार ने सीएम फेलोशिप वालों को सरकारी नौकरी में अधिकतम आयु सीमा में 3 साल की छूट देने को मंजूरी दी। एक साल फेलोशिप वालों को लिखित परीक्षा में 1.5 अंक, दो साल वालों को 3 अंक और तीन साल वालों को 4.5 बोनस अंक दिए जाएंगे।

रायसेन के खेत में मलेशियाई मौसम उपकरण खेत में गिरा, हजारों किलोमीटर का सफर तय कर भारत पहुंचा

रायसेन(नप्र)। मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के सुल्तानगंज क्षेत्र में उस समय सनसनी फैल गई, जब आसमान से एक अज्ञात इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अचानक खेतों में आ गिरा। ग्राम मरखंडी में हुई इस घटना ने स्थानीय लोगों को दहशत में डाल दिया। उपकरण पर ' मलेशिया ' लिखा देख ग्रामीणों के बीच तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई और लोग इसे कोई संदिग्ध वस्तु या विस्फोटक समझने लगे।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, गांव के ऊपर खुले आसमान में एक वस्तु तेजी से नीचे की तरफ आ रही थी। अजीब सी दिखने वाली वस्तु देख गांव के लोग डर गए और गांव से बाहर खुले में खेतों की तरफ भागे। गांव के लोगों ने इसको विस्फोटक समय और धमाके के डर के चलते तत्काल पुलिस

को फोन लगाकर सूचना दी थी। वहीं कुछ युवाओं ने इसकी फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दी। सूचना मिलते ही सुल्तानगंज थाना प्रभारी श्यामराज सिंह राजपूत दलबल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने सुरक्षा के लिहाज से घेराबंदी की और मशीन की बारीकी से जांच की। प्रारंभिक जांच के बाद पुलिस ने साफ किया कि यह कोई विस्फोटक नहीं है, बल्कि मौसम विभाग से जुड़ी कोई डिवाइस या वस्तु है, जिसके बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।

मौसम विभाग को जानकारी भेज दी है- एसडीओपी अनिल मौर्य ने मीडिया को बताया कि उपकरण को कब्जे में ले लिया गया है और इसकी पूरी जानकारी संबंधित मौसम विज्ञान केंद्र को भेज दी गई है। उन्होंने जनता से अपील की है कि किसी भी संदिग्ध वस्तु को खुद हाथ न लगाएं और तुरंत प्रशासन को सूचित करें।

मौसम विभाग से जुड़ा वैज्ञानिक यंत्र है

पुलिस के अनुसार, यह उपकरण एक 'रेडियोसॉन्ड' है। यह एक वैज्ञानिक यंत्र है, जिसका उपयोग मौसम विभाग द्वारा किया जाता है। यह यंत्र हवा की गति, तापमान, नमी और वायुमंडलीय दबाव को मापने के लिए गुब्बारों के जरिए आसमान में छोड़ा जाता है। मलेशिया कनेक्शनः संभावना जताई जा रही है कि यह मलेशिया के मौसम विभाग का उपकरण हो सकता है, जो तेज हवाओं के चलते रास्ता भटककर भारतीय सीमा में दाखिल हो गया।

मंदसौर सबसे ठंडा, 4.6 डिग्री सेल्सियस रहा तापमान

पचमढ़ी और नीमच में भी ठिठुरन, न्यूनतम तापमान 6 डिग्री के आसपास

भोपाल (नप्र)। ओले और बारिश का दौर थमने के बाद मध्य प्रदेश में सर्दी और घने कोहरे का असर बढ़ गया है। गुरुवार सुबह प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में कोहरा छाया रहा। कई जिलों में सुबह 10 बजे तक धूप नहीं निकली थी। भोपाल, ग्वालियर समेत 20 से ज्यादा जिलों में मध्यम से घना कोहरा दर्ज किया गया, जिससे जनजीवन प्रभावित हुआ और विजिबिलिटी कम रही।

मौसम विभाग के अनुसार ग्वालियर और दतिया में सबसे घना कोहरा रहा। रात के तापमान में भी गिरावट आई है। वहीं प्रदेश में मंदसौर सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 4.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इसके अलावा पचमढ़ी (नर्मदापुरम) में 5.8, मरुखेड़ा (नीमच) में रात का तापमान 7.5 डिग्री सेल्सियस रहा।

30 जनवरी- प्रदेश के उत्तरी हिस्से में कोहरा छा सकता है। बारिश का अलर्ट नहीं है। दिन-रात में ठंड का असर बढ़ सकता है।

31 जनवरी- ग्वालियर, भिंड, मुरैना, दतिया, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, सागर, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, नीमच, मंदसौर, आगर-मालवा, राजगढ़ और शाजापुर में भी कोहरा छा सकता है।

1 फरवरी- भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, आगर-मालवा, राजगढ़, शाजापुर, देवास, हरदा, सीहोर, नर्मदापुरम, रायसेन, विदिशा, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, सागर, नरसिंहपुर, टीकमगढ़, छतरपुर, दमोह, पन्ना, कटनी, सतना, मैहर और रीवा में भी कोहरा छा सकता है।

जबलपुर में सुबह घना कोहरा और कड़ाके की ठंड, 10.30 बजे के बाद निकली धूप- जबलपुर में गुरुवार सुबह 10.30 बजे तक कड़ाके की ठंड और घना कोहरा छाया रहा। कोहरे के कारण सड़कों पर दृश्यता कम रही और लोगों को आवाजाही में परेशानी का सामना करना पड़ा। इसके बाद धूप निकलने से ठंड से कुछ राहत मिली।लोग सर्दी के इंतजाम के साथ घरों से बाहर निकलते नजर आए। बच्चे स्कूल जाते दिखाई दिए, वहीं कामकाजी लोग भी अपने-अपने कार्यस्थलों के लिए रवाना हुए। धूप निकलने के बाद शहर में सामान्य गतिविधियां धीरे-धीरे शुरू हो गईं।

रतलाम में बादल छाए, शीतलहर से बढ़ी ठंड

रतलाम में गुरुवार सुबह से मौसम बदल गया है। सुबह से ही घना कोहरा छाया रहा और 10 बजे तक सूरज की झलक नहीं मिली। आसमान में बादलों की ओट के बीच सूरज की लुकाछिपी जारी रही। ठंडी हवाओं के कारण ठंड का असर बना हुआ है। बुधवार को मौसम खुला रहा था, दिन में धूप खिली थी। उस दिन अधिकतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस और रात का न्यूनतम तापमान 11.2 डिग्री दर्ज किया गया था। गुरुवार को बदलते मौसम से ठिठुरन बढ़ गई और सड़कों पर दृश्यता कम रही।

छतरपुर में बढ़ी ठंड, बादलों और धुंध के बीच बूंदाबांदी के आसार

छतरपुर में बुधवार-गुरुवार की दरमियानी रात का न्यूनतम तापमान 14 दर्ज किया गया। सुबह 8:30 बजे तक आसमान में बादल छाए रहे और सूरज नहीं दिखा। मौसम में हल्की-फुल्की बूंदाबांदी और ठंडी हवाओं का दौर जारी है।

आज दिन का अधिकतम तापमान 22-23 डिग्री के बीच रहने की संभावना है, जबकि नमी का स्तर 95 प्रतिशत और विजिबिलिटी 1000 मीटर दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार यह अचानक बदलाव वेस्टर्न डिस्टर्बेंस की वजह से है। विशेषज्ञों का कहना है कि बूंदाबांदी फसलों के लिए लाभकारी है, लेकिन तेज बारिश और ओले फसलों के लिए नुकसानदेह हो सकते हैं।

बाल्टी में डूबने से बच्ची की मौत

खेलते हुए बाथरूम तक पहुंची थी 10 महीने की मासूम, 10 मिनट बाद मां ने देखा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 10 महीने की बच्ची की पानी से भरी बाल्टी में डूबने से मौत हो गई। ईदगाह हिल्स के एक फ्लैट में बुधवार रात करीब 10.30 बजे बच्ची खेलते-खेलते बाथरूम में चली गई थी। इसी दौरान मुंह के बल बाल्टी में जा गिरी। करीब 10 मिनट बाद जब मां ने देखा तो बच्ची का चेहरा नीला पड़ चुका था। जानकारी के मुताबिक करण सिंह जाटव पीएनबी कॉलोनी ईदगाह हिल्स में परिवार के साथ रहते हैं। परिवार में पत्नी के अलावा 5 साल का बेटा भी है। फौरन पति करण सिंह को सूचना दी। थोड़ी देर बाद पति के साथ बच्ची को हमीदिया अस्पताल लेकर पहुंची। जहां डॉक्टरों ने बच्ची को मृत घोषित कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मॉर्चुरी में रखवाया और मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू की। गुरुवार को बच्ची का शव पोस्टमॉर्टम के बाद परिजन को सौंपा गया। पुलिस ने परिजन के डिटेल बयान दर्ज नहीं किए हैं।

किचन में व्यस्त थी मां, थोड़ी देर बाद बच्ची को बाल्टी में पाया- मृतका के मामा संदीप ने बताया कि हादसे के समय बच्ची की मां किचन में व्यस्त थी। करीब 10 मिनट तक जब बच्ची नजर नहीं आई तो उन्होंने बेटे से पूछा। उसने बहन के साथ होने और उसकी जानकारी होने से इनकार कर दिया। तब मां ने बाथरूम को चेक किया तो बच्ची को बाल्टी में डूबा पाया। उसके पांव ऊपर थे जबकि सिर पानी में डूबा हुआ था। शाहजहांनाबाद पुलिस का कहना है कि फोरेंसिक टीम ने भी जांच की है। घटना की हर एंगल से जांच की जा रही है।

भोपाल-विदिशा रोड पर ट्रक से टकराई बस

हादसे के समय 40 यात्री सवार थे, किसी को गंभीर चोट नहीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल विदिशा रोड स्थित गौर शादी हॉल के करीब 40 यात्रियों से भरी एक बस और ट्रक की आमने-सामने से जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर लगने के बाद बस सड़क से उतरी और एक पेड़ से टकरा गई।

हालांकि बस में सवार चालक-परिचालक सहित यात्रियों को गंभीर चोट नहीं लगी। पुलिस का कहना है कि थाने में शिकायत नहीं आई है, हादसे की सूचना है। कोई गंभीर जनहानी नहीं हुई है।

टीआई सरसवती चौहान के मुताबिक गुरुवार की शाम को गुप्ता ट्रैवल्स की बस भोपाल से विदिशा जा रही थी। विदिशा रोड गौर शादी हॉल के पास बस टाटा 407 ट्रक से टकराई और कच्चे रास्ते पर उतर गई। इससे बस का अगला कांच टूटा और चालक को मामूली चोट आई हैं। यात्रियों को गंभीर चोट की सूचना नहीं है। किसी ने शिकायत भी दर्ज नहीं कराई है। यात्री अपने-अपने घर लौट गए हैं। शिकायत मिलने पर जांच कर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री राज्य स्तरीय पुष्प प्रदर्शनी का करेंगे शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शुक्रवार 30 जनवरी को दोपहर 3 बजे कृषक कल्याण वर्ष 2026 के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय पुष्प प्रदर्शनी का शुभारंभ शासकीय गुलाब उद्यान, लिंक रोड क्रमांक-1, भोपाल में करेंगे। राज्य स्तरीय पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग और मध्यप्रदेश रोज़ सोसायटी द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। इसका उद्देश्य पुष्प उत्पादन और उद्यानिकी गतिविधियों को प्रोत्साहन देना है।

मुख्यमंत्री करेंगे वानिकी सम्मेलन एवं आई.एफ.एस. मीट का शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शुक्रवार 30 जनवरी को आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन अकादमी भोपाल में सुबह 10:30 बजे वानिकी सम्मेलन एवं आई.एफ.एस. मीट-2026 का शुभारंभ करेगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव वन विभाग के आई.एफ.एस. थीम गीत का विमोचन कर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड भी प्रदान करेंगे। वन, पर्यावरण राज्यमंत्री श्री दिलीप सिंह अहिरवार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री व्ही.एन. अंबाडे और वन अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे।

रील बनाने से मना किया तो पति को मार डाला

नाबालिग पत्नी ने शादी की पगड़ी से गला घोंटा, यूट्यूब से सीखा फंदा बनाना

झाबुआ (नप्र)। झाबुआ में पत्नी बारात में रील नहीं बनाने देने पर इस कदर नाराज हुई कि पति की हत्या कर दी। वह भी शादी की पगड़ी से गला घोंटकर। इसके लिए यूट्यूब देखकर पूरी प्लानिंग की। वारदात थांदला थाना इलाके में 28 जनवरी की है। पुलिस ने मामले का 24 घंटे के भीतर खुलासा करते हुए नाबालिग पत्नी को अभिरक्षा में ले लिया है। एसपी डॉ. शिवदयाल सिंह ने बताया कि 28 जनवरी को दोपहर करीब 12 बजे डायल 112 पर सूचना मिली थी कि 25 वर्षीय कैलाश पिता रायचंद माल का शव उसके घर में संदिग्ध हालत में पड़ा है। मौके पर पहुंची पुलिस को शुरुआती जांच में मामला उलझा हुआ लगा।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में गला दबाने की पुष्टि- पोस्टमार्टम रिपोर्ट में पता चला कि कैलाश की गला दबाकर हत्या की गई है। पुलिस ने इसी पॉइंट पर जांच आगे बढ़ाई। इस दौरान पता लगा कि कैलाश अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह करता था। जिसके कारण उनके बीच अक्सर विवाद होता रहता था। पुलिस ने इसे आधार बनाकर पत्नी को पूछताछ के लिए थाने बुलाया। जहां सख्ती बरतने पर पत्नी ने अपराध कबूल लिया।

रील बनाने को लेकर हुई थी नोकझोंक

पत्नी ने बताया कि 28 जनवरी को कैलाश और वो एक शादी समारोह में गए थे। वहां पत्नी डीजे पर नाचते हुए रील बना रही थी। कैलाश ने उसे नाचने और सोशल मीडिया पर रील अपलोड करने से मना किया। इसी बात पर दोनों के बीच तीखी नोकझोंक हुई थी।

लापरवाही पर एजेंसी होगी टर्मिनेट: राज्यमंत्री श्रीमती गौर

विकास कार्यों की समीक्षा के दौरान नियमित मॉनिटरिंग के दिए निर्देश

भोपाल (नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने गुरुवार को मंत्रालय में विकासकार्यों की समीक्षा की। बैठक में उन्होंने साफ कहा कि जो एजेंसी और ठेकेदार काम में लापरवाही बरत रहे हैं, उन्हें टर्मिनेट किया जाए। उन्होंने कहा कि सभी कार्य समयसीमा में पूर्ण होने चाहिए, जनहित के कार्यों में लापरवाही और देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि काम की नियमित मॉनिटरिंग हो, गुणवत्ता से समझौता न किया जाए।

समीक्षा बैठक में बावड़ियाकला चौराहा (अपोलो सेज अस्पताल) से आशिमा मॉल तक रेलवे ओवरब्रिज निर्माण, बाबूलाल गौर सेतु क्षेत्र में ट्रैफिक सुधार के प्रस्तावित काम, जेके रोड, पिपलानी-खजूरी रोड, एमजीएम स्कूल मार्ग, आनंद नगर-ट्रांसपोर्ट नगर सड़क, अवधपुरी तिराहा से एसओएस बाल ग्राम तक सड़क निर्माण और महात्मा गांधी चौराहे से न्यू फोर्ट शिव मंदिर, कैरियर कॉलेज, शाहपुरा थाना से आकृति ईकोसिटी तक नहर के दोनों ओर बैरियर लगाने के कामों की प्रगति की समीक्षा की गई। राज्यमंत्री गौर ने सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों से कहा कि काम में तेजी लाई जाए और जनता को जल्द राहत मिले। बैठक में लोक निर्माण विभाग, नगर निगम और अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने कार्यों के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित कैलाश चंद्र पंत का मुख्यमंत्री निवास में पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र और भगवान महाकाल की प्रतिमा भेंट कर अभिनंदन किया।

छिंदवाड़ा में गाजर का हलवा खाना पड़ा भारी...

एक ही परिवार के मासूम सहित 11 लोग बीमार, 6 की हालत नाजुक

छिंदवाड़ा (नप्र)। जिले में एक बार फिर फूड पॉइज़निंग का गंभीर मामला सामने आया है। अमरवाड़ा स्थित बीकानेर स्वीट्स से गाजर का हलवा खाने के बाद एक साथ 11 लोग बीमार हो गए। सभी को उल्टी और पेट दर्द की शिकायत होने लगी, जिसके बाद उनकी हालत बिगड़ने पर तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया। गंभीर स्थिति को देखते हुए 6 मरीजों को जिला अस्पताल रेफर किया गया। मामले की सूचना मिलते ही अधिकारियों ने जांच शुरू कर दुकान को सील कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार, पूरा मामला ग्राम पंचायत सिंगोड़ी का है। अमरवाड़ा के बीकानेर स्वीट्स से कुछ लोगों ने गाजर का हलवा खरीदा था। हलवा खाते ही सभी लोगों की तबीयत अचानक बिगड़ गई। सभी को उल्टी और पेट दर्द की समस्या होने लगी। देखते ही देखते हालत बिगड़ने पर उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। डॉक्टरों ने इलाज के दौरान बताया कि सभी फूड पॉइज़निंग के शिकार हुए हैं। 11 में से 6 लोगों की हालत बेहद नाज़ुक होने के कारण उन्हें जिला अस्पताल रेफर किया गया।

27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण, अब 4 फरवरी को सुनवाई

सरकार के वकील नहीं पहुंचे, कोर्ट ने कहा- ये गंभीर आचरण; ओबीसी एडवोकेट ने जताई नाराजगी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने से जुड़े मामलों की सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान गुरुवार को राज्य सरकार की बड़ी लापरवाही सामने आई। कोर्ट में जब मामले सुनवाई के लिए बुलाए गए, तब मध्य प्रदेश सरकार की ओर से एक भी अधिवक्ता मौजूद नहीं था। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए इसे गंभीर आचरण बताया और खेद प्रकट किया। ओबीसी वर्ग के अधिवक्ताओं के अनुरोध पर अब इन मामलों की अगली सुनवाई 4 फरवरी 2026 को होगी।

106 नंबर पर सूचीबद्ध थे सभी मामले- सुप्रीम कोर्ट में न्यायमूर्ति नरसिंहा और न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई की खंडपीठ के समक्ष ओबीसी आरक्षण से जुड़े सभी प्रकरण गुरुवार को सीरियल नंबर 106 पर अंतिम बहस के लिए सूचीबद्ध थे। जैसे ही मामलों को कॉल किया गया, मध्य प्रदेश सरकार की ओर से कोई भी वकील उपस्थित नहीं हुआ। सुनवाई में मध्य प्रदेश सरकार की ओर से एक भी अधिवक्ता मौजूद नहीं था।

एसजी तुषार मेहता सहित 6 वकील हायर, फिर भी गैरहाजिरी- सुप्रीम कोर्ट में ओबीसी वर्ग के सीनियर एडवोकेट अनूप चौधरी ने बयान जारी कर कहा कि मध्य प्रदेश सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता समेत पांच अन्य वरिष्ठ अधिवक्ताओं को नियुक्त कर रखा है। इसके बावजूद सुनवाई के दिन एक भी वकील का कोर्ट में मौजूद न होना सरकार की मंशा पर सवाल खड़े कर रहा है।

हाईकोर्ट से सभी केस सुप्रीम कोर्ट ट्रांसफर किए गए- राज्य सरकार ने हाईकोर्ट से ओबीसी आरक्षण से जुड़े सभी प्रकरण सुप्रीम कोर्ट में ट्रांसफर करवा दिए थे। आरोप है कि 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण लागू करने के दबाव से बचने के लिए ऐसा किया गया है। सरकार भर्ती विज्ञापनों में ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने की बात तो कर रही है, लेकिन नियमों के विरुद्ध 13 प्रतिशत पद होल्ड किए जा रहे हैं।

ना हाईकोर्ट, ना सुप्रीम कोर्ट का स्टे

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने वाले कानून पर न हाईकोर्ट ने स्टे दिया है न ही सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगाई है। इसके बावजूद सरकार पिछले एक साल से अधिक समय से सुनवाई में केवल तारीख पर तारीख लेती आ रही है।

पहले हर पेशी पर समय मांगते रहे, आज पहुंचे ही नहीं

अब तक हर सुनवाई में महाधिवक्ता प्रशांत सिंह महाधिवक्ता कार्यालय के एक दर्जन विधि अधिकारियों के साथ उपस्थित होकर समय मांगते रहे, लेकिन गुरुवार को सुनवाई के दौरान वे भी कोर्ट में मौजूद नहीं थे।

राजगढ़ पैलेस की मिट्टी में मिले सोने के सिक्के

70 ग्रामीणों ने शुरू की खुदाई, सरपंच बोले- सड़क मिट्टी में दबे थे सिक्के

खजुराहो(नप्र)। खजुराहो के पास स्थित राजगढ़ गांव में उस समय सनसनी फैल गई, जब ओबेरॉय ग्रुप की ओर से लीज पर लिए गए ऐतिहासिक राजगढ़ पैलेस परिसर में चल रहे निर्माण कार्य से निकली मिट्टी में सोने के सिक्के मिलने की चर्चाएं सामने आईं।

बताया जा रहा है कि पैलेस में स्टाफ क्वार्टर निर्माण के दौरान खोदी गई मिट्टी को 22 जनवरी को महल से करीब 300 मीटर दूर सड़क किनारे डाला गया था। इसके बाद हाल ही में हुई बारिश के बाद स्थानीय ग्रामीणों और सरपंच का दावा है कि इसी मिट्टी से 10-12 लोगों को सोने जैसे सिक्के मिले हैं। स्थानीय लोगों का दावा है कि ये सिक्के लगभग 500 साल पुराने हो सकते हैं।

सोने की उम्मीद में ग्रामीणों ने सड़क किनारे शुरू की खुदाई- सूचना मिलने पर जब मीडिया की टीम मौके पर पहुंची , तो देखा कि करीब 50 से 70 ग्रामीण सड़क किनारे पड़ी मिट्टी में गैंती और फावड़ों से खुदाई कर रहे थे। महिलाएं और बच्चे लोहे की छलनियों से मिट्टी छान रहे थे, इस उम्मीद में कि उन्हें भी सोने का सिक्का मिल जाए। स्थानीय निवासी राधा अहिरवार ने बताया कि उनकी पांच साल की नातिन सुहानी को छलनी से मिट्टी छानते समय एक सिक्का मिला था, लेकिन पास की ही कुशवाहा समाज की एक लड़की वह सिक्का छीनकर ले गई। राधा ने गुस्से और दर्द के साथ बताया कि वे मजदूर परिवार से हैं और उन पर 70 से 80 हजार रुपए का कर्ज है।

सरपंच बोले- सड़क समतलीकरण की मिट्टी में दबे थे सिक्के

राजगढ़ ग्राम पंचायत के सरपंच रमेश प्रसाद बिल्ला ने बताया कि ग्राम पंचायत क्षेत्र में बसंत पंचमी मेले के लिए सड़क समतलीकरण का कार्य चल रहा था। इसके लिए ओबेरॉय पैलेस (डीआर कंपनी) के निर्माण स्थल से काली मिट्टी लाई गई थी। बारिश के बाद जब मिट्टी धुली तो उसमें दबे सोने जैसे सिक्के चमकने लगे। सबसे पहले गांव के एक बच्चे ने इन्हें देखा, जिसके बाद पूरे गांव में सिक्के ढूंढने की होड़ मच गई। सरपंच के अनुसार ग्रामीणों को बड़ी मात्रा में सोने के सिक्के और बिस्कुट मिलने की चर्चा है। किसी को 10 तो किसी को 40 तक सिक्के मिलने की बात कही जा रही है। इन सिक्कों पर उर्दू या अरबी जैसी भाषा लिखी हुई बताई जा रही है। घटना की जानकारी पुलिस, एसडीएम और तहसीलदार को दे दी गई है।

स्थानीय निवासियों का दावा 7-8 ग्राम का है सिक्का

सिक्कों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर भी सामने आई जिनमें एक व्यक्ति के हाथ में सिक्का दिख रहा है और उस पर आकृति बनी हुई है। स्थानीय निवासियों का दावा है कि प्रत्येक सिक्के का वजन 7 से 8 ग्राम है। हालांकि, इनकी प्रामाणिकता की पुष्टि अभी नहीं हुई है।

बुंदेला महल क्षेत्र से जुड़े हो सकते प्राचीन सिक्के

राजगढ़ गांव बुंदेला राजवंश के 350 साल पुराने महल के लिए जाना जाता है। 'द ओबेरॉय राजगढ़ पैलेस होटल' भी इसी ऐतिहासिक महल के पास स्थित है, जिसके लिए आसपास की जमीन ओबेरॉय समूह को लीज पर दी गई थी। यह आशंका जताई जा रही है कि सिक्के इसी ऐतिहासिक क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं।

समाजसेवी बोले- राजगढ़ रहा समृद्ध नगर, खजाने की संभावना

समाजसेवी राकेश कुशवाहा निवासी चन्दननगर, ने बताया कि उन्हें सोशल मीडिया के जरिए राजगढ़ क्षेत्र में पुराने सिक्के मिलने की जानकारी मिली। उन्होंने कहा कि राजगढ़ पैलेस का इलाका पुराने समय में एक बड़ा और समृद्ध नगर रहा है, जिसका विस्तार राजगढ़ पहाड़ से लेकर रैपुरा, चनारी और बरबसपुरा तक फैला हुआ था। इतिहास में यहां 'सात झंडे का बाजार' भी लगता था, जो इस क्षेत्र के बड़े व्यापारिक केंद्र होने का प्रमाण है। राकेश कुशवाहा के अनुसार, उस समय बड़ी आबादी और संपन्नता के कारण लोग अपने कीमती सामान और धन को सुरक्षित रखने के लिए जमीन में गाड़कर रखते थे।

संपादकीय

अब एनसीपी का क्या होगा?

राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजिखत) के मुखिया अजित पवार के विमान दुर्घटना में असामयिक निधन से न केवल उनकी पार्टी के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग गया है, बल्कि इससे महाराष्ट्र की राजनीति भी काफी हद तक प्रभावित होगी। क्योंकि अजित पवार के रहते पहले से ही राज्य में सत्तारूढ़ महायुति में खींचतान चल रही है। पहले यह नगरपालिका चुनावों में दिखी और अब जिला परिषद के चुनावों में दिख रही है। महायुति में शामिल तीनों पार्टियां राज्य सत्ता में भले साथ हों, लेकिन सबकी अपने अपने विस्तार की महत्वाकांक्षाएं हैं और इसी कारण लगातार टकराव देखने को मिल रहा है। अजित पवार और मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस के बीच तो फिर भी काफी सामंजस्य रहा है, लेकिन दूसरे उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे कई बार खुलकर अपनी नाराजी जता चुके हैं। भले ही इसे राजनीतिक सौदेबाजी माना जाए, लेकिन यह हो रहा है। दूसरे, अजित पवार के पार्टी में कोई नंबर दो सर्वमान्य नेता नहीं है। ऐसे में पार्टी का नेतृत्व कौन करेगा, यह बड़ा और अभी अनुत्तरित सवाल है। सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या अब अजित पवार की पार्टी में नेतृत्व, उत्तराधिकार और संभावित टूट-फूट को लेकर क्या स्थिति बनेगी? क्या एनसीपी के दोनों गुट एक होंगे या फिर विवाद और बढ़ेगा? ध्यान रहे कि अजित पवार एक मजबूत नेता थे। उन्होंने कई सरकारों के साथ काम किया फिर चाहे कांग्रेस-एनसीपी की सरकार हो या फिर उद्धव ठाकरे, एकनाथ शिंदे और देवेंद्र फडणवीस की। 2023 में उन्होंने अपने चाचा शरद पवार से अलग होकर एनसीपी का बड़ा हिस्सा अपने साथ ले लिया और बीजेपी-शिवसेना (शिंदे) के साथ महायुति सरकार में शामिल हुए। चुनाव आयोग ने उनके धड़े को आधिकारिक एनसीपी का नाम और सिंबल दिया। पिछले दिनों संकेत मिल रहे थे कि एनसीपी के अजित और शरद पवार धड़े एक हो सकते हैं। लोकल बॉडी चुनावों में दोनों ने कुछ जगहों पर साथ मिलकर लड़ा। दिसंबर में अजित पवार ने कहा था कि 'परिवार एक हो गया है'। लेकिन अब उनकी मौत से यह सब ठप हो गया लगता है। अजित पवार के धड़े में 41 विधायक हैं, जो महायुति सरकार का मजबूत सहारा हैं। अगर धड़े टूटे तो सरकार पर असर पड़ सकता है, लेकिन महायुति के पास बहुमत है। बीजेपी और शिवसेना (शिंदे) मजबूत हैं, लेकिन एनसीपी के विधायकों में बगावत या टूट की आशंका से राजनीति में हलचल मच सकती है।

विपक्षी एनसीपी (एसपी) में शरद पवार, सुप्रिया सुले और रोहित पवार जैसे नेता हैं। कुछ लोग कह रहे हैं कि अजित पवार के निधन से परिवार एक हो सकता है, लेकिन यह आसान नहीं होगा। अजित पवार के जाने के बाद उनकी पार्टी और परिवार में कई चेहरे हैं। उकी पत्नी और बेटे के अलावा पार्टी में कई नेता भी मुख्य दावेदार हैं। गौरतलब है कि पहले बरसों कांग्रेस में रहे शरद पवार ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का गठन 10 जून 1999 को किया था। हालांकि जब अजित पवार ने जुलाई, 2023 में एनसीपी को अपने हाथों में ले लिया था, तब शरद पवार के साथ वाले नेताओं ने एनसीपी (शरदचंद्र पवार) का गठन किया था। अगर एनसीपी के दोनों खेमे मिल जाते हैं तो एनसीपी की ताकत बढ़ जाएगी, क्योंकि शरद पवार की अगुवाई वाली एनसीपी के केंद्र में अधिक अहमियत रखती है। एनसीपी (एसपी) के राज्यसभा में दो सदस्य हैं तो लोकसभा में 8 सदस्य हैं। महाराष्ट्र विधानसभा में 10 विधायक और विधान परिषद में 3 सदस्य हैं। अगर दोनों एनसीपी का विलय होता है तो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की कुल ताकत केंद्र में 9 सांसदों की लोकसभा में हो जाएगी। महाराष्ट्र विधानसभा में कुल विधायकों की संख्या 50 पहुंच जाएगी।

बांग्लादेश ने गांधी को नहीं माना तो वह टूट जाएगा

नजरिया

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने
गांधी है तो भारत है,किताब के लेखक

बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कुछ वर्षों पहले कहा था कि महात्मा गांधी उनके पिता शेख मुजीबुर्रहमान के आदर्श थे और वे भी उस मार्ग पर चलना पसंद करती है। ऐसा कहकर शेख हसीना ने बांग्लादेश की राष्ट्रीय चेतना और उसकी ऐतिहासिक दिशा का एक बड़ा राजनीतिक संकेत दिया था। आज जब बांग्लादेश में शेख मुजीबुर्रहमान की स्मृतियों को मिटाने,उनके प्रतीकों को धुंधला करने और उनके विचारों को विवादित बनाने की कोशिशें तेज़ होती दिख रही हैं,तब यह प्रश्न और गहरा हो जाता है कि क्या यह केवल सत्ता संघर्ष है या फिर देश की आत्मा को बदलने की रणनीति है।

महात्मा गांधी का जीवन हमें यह बताता है कि सत्ता का हस्तांतरण एक घटना हो सकती है,लेकिन समाज का नैतिक पुनर्निर्माण एक लंबी साधना है। जब दिल्ली में सत्ता हस्तांतरण की औपचारिकताएं चल रही थी,देश आज़ादी का उत्सव मना रहा था,उस समय गांधी दिल्ली से पंद्रह सौ किलोमीटर दूर पूर्वी और पश्चिमी बंगाल में सांप्रदायिकता की आग बुझाने में लगे थे। वे जानते थे कि आज़ादी का असली अर्थ केवल झंडा फहराना नहीं,बल्कि डर के बिना जीने का अधिकार है। जिस आज़ादी के साथ घर जलें,बहन-बेटियों के प्रति निर्ममता हो,मंदिर-मस्जिद तथा धर्म के नाम पर खून बहे,ऐसी आज़ादी अधूरी है। इसलिए गांधी का 15 अगस्त दिल्ली में नहीं,हिंसा के बीच बीता। यही गांधी का नैतिक नेतृत्व था,जो सत्ता से बड़ा था। किसी पद से ऊंचा था और भाषणों से कहीं अधिक प्रभावी था।

बंगाल की नोआखाली की धरती गांधी की उसी साधना की सबसे बड़ी परीक्षा बनी। वहां से सटे चौमुहानी स्टेशन के बाहर गांधी ने हिंदुओं और मुसलमानों से भाईचारा बनाए रखने की अपील की थी। यह कोई सामान्य भाषण नहीं था,यह उस समय के अंधकार में मनुष्यता की लौ थी। पर विडंबना देखिए कि जिस स्थान पर गांधी ने शांति का संदेश दिया,आज वहां उनकी कोई प्रतिमा नहीं, कोई शिलापट नहीं,कोई स्मृति-चिह्न नहीं। यह अनुपस्थिति उस स्मृति को मिटाने का संकेत है जो साम्प्रदायिक राजनीति को असहज करती है। क्योंकि गांधी का नाम आते ही धर्म के नाम पर राजनीति करने वालों के हाथ कांपने लगते हैं। गांधी की उपस्थिति का अर्थ है, नैतिकता का दबाव,आत्मा की आवाज़, और हिंसा का प्रतिरोध।

बांग्लादेश में नोआखाली में पढ़े-लिखे नौजवान और बुज़ुर्ग जानते हैं कि गांधी वहां आए थे। गांधी ने चार महीनों तक नोआखाली के गांवों में पैदल भ्रमण किया,शांति समितियां बनाईं और लोगों को भरोसा दिया कि डर के आगे भी जीवन है। जेबी कृपलानी, सुचेता कृपलानी, डॉ. राममनोहर लोहिया और सरोजनी नायडू जैसे नेताओं ने भी उनके साथ शांति बहाली की कोशिश की। यह यात्रा सिर्फ राजनीतिक नहीं थी,यह एक मानवीय पुनर्वास अभियान था,जहां घायल आत्माओं को मरहम चाहिए था,भाषण नहीं। गांधी चार महीनों तक नंगे पांव रहे। उनका कहना था कि नोआखाली एक श्मशान भूमि है,जहां हज़ारों बेगुनाह लोगों की समाधियां हैं। ऐसी जगह चप्पल पहनना मृत आत्माओं का अपमान है। यह प्रतीक बताता है कि गांधी हिंसा को आंकड़ों में नहीं देखते थे,वे हर मृत व्यक्ति को एक परिवार की टूटती दुनिया मानते थे। आज जब राजनीति लाशों को आंकड़ा और दंगों को रणनीति बना देती है,तब गांधी का यह भाव हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती बन जाता है। आज बांग्लादेश की नई पीढ़ी की गांधी की स्मृतियों से कोई दिलचस्पी नहीं है और यहीं इस देश की सबसे बड़ी चुनौती भी बन गया है।

आज बांग्लादेश में यदि गांधी को भूलाया जा रहा है और जिन्ना के विचारों का महिमामंडन बढ़ रहा है। यह केवल प्रतीकों का संघर्ष नहीं,बल्कि भविष्य का संकट है। जिन्ना का मार्ग राजनीतिक पहचान को धर्म की दीवार पर टिकाता है, जबकि गांधी का मार्ग मनुष्य को धर्म से ऊपर रखता है। जिन्ना की राजनीति विभाजन को समाधान बताती है,गांधी की राजनीति सह-अस्तित्व को सत्य मानती है। जब कोई देश जिन्ना के रास्ते पर चलता है तो वहां नागरिक नहीं, समुदाय बनते हैं,वहां अधिकार नहीं,भय पैदा होता है। वहां लोकतंत्र नहीं, बहुसंख्यकवाद और कट्टरता का शासन बढ़ता है। कोई भी राष्ट्र जो गांधी को भूलता है,वह केवल एक व्यक्ति को नहीं भूलता। वह अहिंसा,सत्य,नैतिक साहस और मानवता की उस भाषा को भूलता है जो समाज को जोड़ती है। और जब राष्ट्र जोड़ने वाली भाषा भूल जाता है,तो टूटने वाली भाषाएं तेज़ हो जाती हैं और घृणा, अफवाह, प्रतिशोध और हिंसा का प्रभाव बढ़ जाता है। ऐसे में देश का नष्ट होना केवल भौगोलिक टूटन नहीं होता, बल्कि वह धीरे-धीरे सामाजिक,सांस्कृतिक और नैतिक विनाश में बदल जाता है।

बांग्लादेश के लिए सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि वह मुजीब और गांधी की परंपरा में एक समावेशी राष्ट्र बनेगा या जिन्ना की दिशा में जाकर पहचान की राजनीति का कैदी बनेगा। बांग्लादेश का जन्म ही एक ऐतिहासिक चेतावनी थी। 1971 में पाकिस्तान का टूटना केवल सैन्य हार नहीं थी,वह विचारधारा की हार थी। पाकिस्तान ने जिन्ना की उस राजनीति को अपनाया जिसमें धर्म के नाम पर राष्ट्र गढ़ा गया,लेकिन समानता और सम्मान की बुनियाद कमजोर रखी गई। परिणाम यह हुआ कि बंगाली अस्मिता,भाषा,संस्कृति और अधिकारों को दबाने का प्रयास किया गया और वही दमन अंततः पाकिस्तान के विघटन का कारण बना। यह इतिहास बताता है कि जो राष्ट्र विविधता को कुचलता है,वह एक दिन खुद अपने ही बोझ से टूट जाता है। आज यदि बांग्लादेश भी उसी रास्ते पर बढ़ता है, तो उसका हश्र भी अलग नहीं होगा। गांधी कहते हैं कि राष्ट्र का निर्माण घृणा से नहीं, विश्वास से होता है,डर से नहीं,न्याय से होता है और हिंसा से नही,संवाद से होता है। यही समावेशी दृष्टि बांग्लादेश को टूटने से बचा सकती है।

कुछ ही दिनों बाद बांग्लादेश में चुनाव होने वाले हैं। ऐसे समय में यह आशंका गहराती जा रही है कि जिन्ना की राह पर चलने वाले कट्टरपंथी दल सत्ता के केंद्र में आ सकते हैं। यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं होगा,बल्कि बांग्लादेश की आत्मा, उसकी सामाजिक संरचना और उसके भविष्य की दिशा बदल देने वाला मोड़ साबित हो सकता है। कट्टर राजनीति का सबसे पहला हमला नागरिकता पर होता है। वहां लोग नागरिक नहीं रहते,समुदायों में बांट दिए जाते हैं। धर्म के नाम पर पहचान तय होती है,अधिकार घटते हैं और भय बढ़ता है। अल्पसंख्यक असुरक्षित होते हैं,बुद्धिजीवी चुप कर दिए जाते हैं,पत्रकार दबाव में आते हैं और असहमति को देशद्रोह कहकर कुचलने की कोशिश होती है। इस प्रक्रिया में लोकतंत्र केवल चुनावी औपचारिकता बनकर रह जाता है और सत्ता का चरित्र धीरे-धीरे तानाशाही में बदलने लगता है। बांग्लादेश के आगामी चुनाव केवल सत्ता-परिवर्तन नहीं बल्कि देश की आत्मा और दिशा तय करने वाले हैं। यदि जमात-ए-इस्लामी और अन्य कट्टरपंथी ताकतें सत्ता में प्रभावी भूमिका निभाती हैं,तो उनसे समावेशी राष्ट्र-निर्माण की उम्मीद करना कठिन होगा। ऐसी राजनीति अक्सर नागरिक को नहीं,धर्म को केंद्र में रखती है। परिणामस्वरूप समाज में अविश्वास, भय और ध्रुवीकरण बढ़ेगा। यह वही राह है जिसे इतिहास में जिन्ना की सोच के रूप में देखा जाता है,जहां राष्ट्र की पहचान धर्म से तय होने लगती है।

भारत के पड़ोसी देशों की राजनीतिक स्थिति आज एक गहरे संक्रमणकाल से गुजर रही है। कहीं लोकतंत्र कमजोर हो रहा है,कहीं सेना और कट्टरपंथ का प्रभाव बढ़ रहा है तो कहीं आर्थिक संकट ने जनता को असहाय बना दिया है। ऐसे समय में गांधीजी की विचारधारा, अहिंसा, संवाद, सत्य, सहिष्णुता और जनशक्ति जैसे मूलभूत गुण इन देशों के लिए सिर्फ नैतिक उपदेश नहीं,बल्कि राजनीतिक स्थिरता का व्यावहारिक रास्ता बन सकती है। गांधीजी की राजनीति का मूल था,हिंसा नहीं,संवाद,बदला नहीं,मेल-मिलाप और सत्ता नहीं,सेवा। पड़ोसी देशों में आज जो संकट हैं,उनका समाधान केवल सैन्य ताकत या कठोर शासन से नहीं निकलेगा।

गांधी का सत्याग्रह जनता को अहिंसक तरीके से अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने की शक्ति देता है। उनका सर्वधर्म समभाव बहुसंख्यकवाद और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ सामाजिक संतुलन पैदा करता है। जिन्ना ने राजनीतिक लाभ के लिए धर्म को राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला बनाया और इसी सोच ने विभाजन को जन्म दिया। धर्म आधारित राष्ट्र की यह अवधारणा बाहर से एकता का भ्रम देती है,लेकिन भीतर से समाज को संकीर्णता,असहिष्णुता और स्थायी अस्थिरता की ओर धकेल देती है। यही कारण है कि पाकिस्तान जो धर्म के नाम पर बना,वह जल्द ही आंतरिक विरोधाभासों में उलझ गया और 1971 में टूटकर बिखर गया।

इसके विपरीत गांधी ने धर्म को सत्ता की तलवार नहीं,बल्कि संस्कृति और नैतिकता की सुगंध की तरह देखा। उन्होंने विभिन्न आस्थाओं को जोड़कर सांस्कृतिक एकता के गुलदस्ते में संजोया और लोकतांत्रिक भारत की नींव रखी। गांधी का भारत किसी एक धर्म का नहीं,बल्कि हर नागरिक के सम्मान और अधिकार का भारत है। यही समावेशी दृष्टि भारत को विविधताओं के बावजूद मजबूत बनाती है। आज बांग्लादेश में धर्म को राजनीति का हथियार बनाया गया,तो सामाजिक विभाजन, अल्पसंख्यकों पर संकट और लोकतंत्र का क्षरण बढ़ेगा। गांधी ने यही चेतावनी दी थी की धर्म का इस्तेमाल यदि सत्ता के लिए होगा तो राष्ट्र टूटेगा,समाज बिखरेगा और मनुष्य भीतर से मर जाएगा।

गांधी गए नहीं, गांधी हमारे बीच हैं

पुण्यतिथि पर विशेष

डॉ. सुधीर सक्सेना
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

गांधी आज हमारे बीच नहीं हैं। गांधी का हमारे बीच न होना गांधी के होने की ज़रूरत है। उनकी अनुपस्थिति उनकी उपस्थिति की इंगिति है। उजाला हो तो उसकी क़ीमत का हमें पता नहीं चलता। अंधियारे में उजाले की ज़रूरत और अहमियत बढ़ जाती है। तमस में हम आलोक का स्मरण करते हैं और आवाहन भी। ये पंक्तियां भी उन्हें टेरने जैसी हैं, क्योंकि महात्मा गांधी विश्व इतिहास की ऐसी अपूर्व और अद्भुत शख़्सियत हैं। गांधी ऐसे अलीक योद्धा हैं, जो सदा लीक छोड़कर चले। बड़ी बात यह नहीं कि उन्होंने लीकें तोड़ीं, वरन् बड़ी बात यह कि उन्होंने नयी लीकें रचीं। विश्व इतिहास की महान विभूतियों में गांधी वह व्यक्ति हैं, जिन्हें वर्गीकृत करना कठिन है। गांधी आज़ादी की लड़ाई के अपने पूर्ववर्ती समस्त रणबांकुरों से भिन्न हैं। वे भगवान बुद्ध के बाद इस भूखण्ड में पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने इस महादेश की आत्मा को पहचाना, समूचे देश को आलोड़ित किया और सारा देश इस फ़कीर के पीछे चल पड़ा। गांधी अपने आयुधों से विश्व की सबसे शक्तिशाली हुकूमत के ख़िलाफ़ जंग ही नहीं छेड़ते हैं, वरन् इस गौरवशाली अतीत के पददलित, शोषित और विपन्न महादेश के समक्ष नया सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक फलसफा भी प्रस्तुत करते हैं। गांधी चिन्तन को आचरण में ढालने का प्रतिमान है और अपने समकालीनों से आज़ादी की लंबी लड़ाई में हर कहीं कई कदम आगे नज़र आते हैं। उनके युवा अनुयायी भी उनके साथ कदमताल नहीं कर पाते। गांधी आजीवन अपना सलीब साथ लिए चलते नज़र आते हैं।

गांधी महान क्यों हैं? इसलिए कि उनसे घोर असहमति भी उन्हें खारिज नहीं कर सकती। इसलिए भी कि एक पंक्ति में उन्हें बयां नहीं किया जा सकता। वे गृहस्थ हैं, लेकिन वीत-रागी। कोई आश्चर्य नहीं यदि बापू को बचपन में राम का वनगमन और बुद्ध का गृहत्याग का प्रसंग झकझोरता रहा हो। उपवास, आश्रमों की स्थापना, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोग, पदयात्रा, सत्याग्रह, अहिंसा जहां उन्हें अनायास आर्ष ऋषियों, बौद्ध व जैन श्रमणों से जोड़ देती है, वहीं उनकी करुणा उन्हें प्रभु यीशु की सलीब के निकट ले जाकर खड़ा कर देती है। उनका फक्कड़पन कबीर और मंसूर की याद दिलाता है और सत्य के लिए उनका अदम्य आग्रह सुकरात का। आज़ादी की लड़ाई के अनेक प्रसंगों में वे हठयोगी नज़र आते हैं। बेशक वे निर्मोही हैं और उनका मोह किसी पार्थिव तत्व से नहीं है। उनका साध्य पवित्र है और साधन भी पूत। नौरोजी, तिलक और गोखले का चिन्तन उनमें एक साथ परिष्कार व उन्नयन पाता है। वे किसी की परवाह नहीं करते, किसी की कोई फ़िक्र नहीं, बेफ़िक्र-बेपरवाह, हद्द छोड़कर बेहद्द हुई शख़्सियत हैं गांधी। जेब में 'बार एट लॉ' की सनद, मगर पारम्परिक ढंग से वकालत नहीं। 'चौरी-चौरा' काण्ड हुआ कि सत्याग्रह स्थगित। सबका रोष सिर माथे, मगर टस से मस नहीं। अविचलित, निर्विकार। ब्रिटिश हुकूमत का दम्भ चूर-चूर करने के लिये वे अपने हाथों नमक का चूरा बनाते हैं। सनातनी समाज की कोपदृष्टि से बेख़बर वे अछूतोद्धार और अस्पृश्यता उन्मूलन का अभियान छेड़ देते हैं। लिवरपूल की मिलों के करघे रोकने के लिए वे चरखा कातते हैं। देखते-देखते खादी राष्ट्र की पोशाक बन जाती है। उन्हें गूंगी या विदेशी जुबान में आज़ादी नहीं चाहिए। उनकी आज़ादी की लड़ाई हिन्दी की लड़ाई भी है। आज़ादी के मौके पर जब बीबीसी संवाददाता साक्षात्कार के लिए आता है, बापू कहते हैं- 'जाओ, दुनिया से कह दो गांधी अंग्रेजी भूल गया।' उनके सोच के फलक में हर कोई हैः ब्राह्मण भी, दलित भी, हिन्दू भी, मुसलमान भी, शिक्षा भी, सेवा भी, दस्तकार, मेहतर हर कोई उनकी चिन्ता के दायरे में है। अल्बर्ट आइंस्टाइन सच कहते हैं- 'आने वाली सदियां इस बात पर शायद ही यक़ीन करें कि इस धरती पर हाड़मांस का ऐसा भी कोई आदमी हुआ था।'

विश्व में किसी के मुख से प्राण त्यागते समय 'हे, राम' नहीं निकला। मेरे जाने गांधी से बड़ा रामभक्त कोई दूजा न हुआ। गांधी कबीर के बाद के कबीर हैं, बीसवीं सदी के बलिदानी कबीर। कबीर राम की 'बहुरिया' हैं, और 'कूता' (कुत्ता) भी। लेकिन कबीर का राम दशरथनंदन राम नहीं है। वह घट-घट में व्याप्त, अणु-अणु में व्याप्त, ज़र्रे-ज़र्रे में व्याप्त, जड़-चेतन में व्याप्त अविनाशी राम है। बापू कहते हैं-'मेरे लिए राम नाम ने जो काम किया, वही काम एक ईसाई के लिए यीशु का नाम कर सकता है। वैसा ही असर किसी मुसलमान पर अल्लाह के नाम का हो सकता है...। पर सिर्फ़ नाम रटना पर्याप्त नहीं है। हमारे रोम-रोम में यह नाम बस जाना चाहिए।

30 जनवरी, 1948 तो बहुत बाद की घटना है। गांधी के जीवन के गलियारे में पीछे चलें। चालीस साल पीछे। सन् 1908। तारीख 10 फरवरी। स्थान जोहानिसबर्ग। गांधीजी पंजीकरण के लिए जा रहे थे कि मीर आलम नामक क्षुब्ध भारतीय ने उनका रास्ता रोक लिया। पूछने पर गांधी ने कहा- 'तुम भी चलो। पहले तुम्हारा करवाऊंगा, फिर अपना।' बात पूरी भी न हुई थी कि सिर पर जोरों का डंडा पड़ा। मुख से निकला- 'हे राम।' वे अचेत होकर गिर पड़े। गांधी और साथियों की तब तक पिटाई हुई, जब मीर और साथियों को लगा कि गांधी मर गये।

महात्मा की हत्या के प्रयासों को समेटे जो नाटक चालीस साल खेला गया और 30 जनवरी, 48 को जिसका पटाक्षेप शोकांतिका में हुआ, वह नाटक छह अंकी था। यह प्रश्न अनुत्तरित नहीं है कि उसकी 'स्क्रिप्ट' किसने लिखी? सारी दुनिया पटकथा लेखक के नामधाम, कुल-गोत्र और उनके कुनबे को जानती है। दूसरे गोलमेज सम्मेलन के दौरान लंदन के बिशप बापू से मिलते हैं। कहते हैं- 'प्रभु यीशु ने कहा है कि अपने दुश्मन से भी प्यार करो। आपका क्या कहना है?' चरखा कातने में निमग्न गांधीजी कहते हैं- 'मेरा तो कोई दुश्मन ही नहीं है।'

बिशप अवाक्। बिशप ही क्यों? गांधी के सम्मुख इकबारगी विश्व अवाक् रह जाता है। गांधी का वर्गीकरण मुमकिन नहीं। वह किसी खाने में नहीं अंटते। और जिस खाने में वह खड़े होते हैं, वहां कोई और नहीं ठहरता। साउथ अफ़्रीका का कार्यवाहक पीएम अटार्नी जनरल हैरी एस्कॉब उन्हें पसंद नहीं करता, मगर उसकी लाचारी कि वही गांधी उसके काम आते हैं। डरबन का पुलिस सुपरिटेंडेंट अलेक्जेंडर गांधी और भारतीयों का घोर विरोधी है, मगर गांधी 'कुली' से साबका पड़ता है, तो वह बदल जाता है। और तो और उसकी पत्नी ज़ेन अलेक्जेंडर गांधी की प्राणरक्षा करती है। अकारण नहीं कि गांधी की जान का गाहक मीर आलम उनका 'पक्का सिपाही' बन जाता है और सन् 1914 में गांधी को जानलेवा हमले से बचाता है। यह गांधी का ही बूता है कि वे शहीद सुहरावर्दी जैसे मजहबी और लीगी नेता को अपना बगलगीर बना लेते हैं।

ऐसे थे गांधी। 'थे' नहीं, ऐसे हैं गांधी। सहस्राब्दी की शख़्सियत। या कि इतिहास का विरल व्यक्तित्व। दक्षिण अफ़्रीका में उनके नेतृत्व में नौ साल चले सत्याग्रह में छह हज़ार लोग जेल गये थे। यह एक नया प्रयोग था। सर्वथा नूतन। और अनूठा। संचार क्रांति बाद में हुई, मगर इस कृशकाय व्यक्तित्व के कार्यों का परिमल संपूर्ण विश्व में फैल जाता है। वह प्रेरणा देता है। नेल्सन मंडेला। मार्टिन ल्यूथर किंग। सू की...। आइंस्टाइन उन्हें अमेरिका आमंत्रित करते हैं। आइंस्टाइन जैसी शख़्सियत की मेजबानी। बापू विनम्रतापूर्वक मना कर देते हैं। कहते हैं कि मेरे पास अमेरिका को देने लायक कुछ नहीं है।

इतिहास की दीवार पर लिखी यह इबारत अमिट है। गांधी थे नहीं, गांधी हैं। गांधी रहेंगे। गांधी ने कभी किसी से घृणा नहीं की, लेकिन उनसे घृणा में जी रहे वधिक वृत्ति के उनके बैरी जानते हैं कि गांधी का जीवित रहना उनके लिए कितना घातक है। उनकी फ़िक्र यही है कि गांधी को मारने के बाद गांधी की आत्मा को कैसे मारा जाए। हर ईसा और हर गांधी अपनी सलीब अपने कांधे लेकर चलता है। परंतु यह तो सोचिये कि उनकी हत्या का 'लाइसेंस' उन्हें कौन देता है, जबकि हत्यारों का ईश्वरीय या रामराज्य से कहीं कोई वास्ता नहीं होता।

हे राम, साकार गांधी, निराकार गांधी

पुण्यतिथि विशेष

अनिल त्रिवेदी
लेखक अभिभाषक हैं।

बिड़ला भवन दिल्ली में तीस जनवरी 1948 शाम संध्याकालीन प्रार्थना पर निकले साकार गांधी अपने अंतिम शब्द 'हे राम' के साथ अनन्त निराकार में विलीन हो गए। इस जगत में जन्म, जीवन के साकार स्वरूप का प्रारंभ है तो महाप्रयाण जीवन का अनन्त निराकार में विलीन हो जाना। जीव, हाड़ मांस का पुतला ,सामान्य समझ से माना जाता है।इस जगत में सनातन काल से हाड़-मांस के पुतले भांति भांति के रूप स्वरूप में श्वास प्रश्वास की तरह आते जाते रहते हैं। जगत, जीवन के साकार से निराकार स्वरूप में बदलने का एक अंतहीन सिलसिला हैं। साकार स्वरूप अंततः निराकार में विलीन हो जाता है पर निराकार तो हर कहीं व्याप्त है, शून्य और अनन्त में भी और सूक्ष्म और विराट स्वरूप में भी। जो रूप स्वरूप जन्म मृत्यु से परे है जैसे सत्य अपने आप में पूर्ण हैं,अपूर्ण कभी पूर्ण या असत्य कभी सत्य नहीं हो सकता।

साकार गांधी की सबसे बड़ी सिखावन जगत को यह रही कि 'सत्य ही ईश्वर है'। ईश्वर के साथ साकार मनुष्य के मन में आस्तिक-नास्तिक का सवाल या मत - मतान्तर उठें पर सत्य की सनातनता को लेकर कोई द्वंद या आस्था - अनास्था का सवाल ही नहीं बना। गांधी ने जीवन को सत्य की जीवन शाला बना दिया 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'। सत्य एक दम सरल सहज और स्वाभाविक रूप से सादगीपूर्ण है।सत्य में न तो प्रदूषण है न ही असहिष्णुता, अभद्रता या बनावटी पन है सत्य में दुराव छिपाव या स्मरण विस्मरण का कोई सवाल ही नहीं है। गांधी की कहानी का कुल जमा निचोड़ यह निकला कि एक सामान्य हाड़-मांस का मनुष्य कैसे अपने जीवन में लगातार अपनी कमियों को निरन्तर खुद ब खुद अपनी जीवन की समीक्षा से स्वयं ही त्यागते हुए जीवन को एक सत्याग्रह में बदल सकता है। दक्षिण अफ्रीका में बैरिस्टर गांधी को पहली श्रेणी का वैध टिकट होने पर भी काला आदमी पहली श्रेणी के रेल के डब्बे में चढ़ और यात्रा नहीं कर सकता भले ही वह बैरिस्टर क्यों न हो ! सत्यनिष्ठ बैरिस्टर गांधी के मन के किसी कोने में सत्य की समझ नहीं होती तो गांधी जैसा हाड़-मांस का पुतला निराकार सत्य को साकार सत्याग्रह में नहीं बदल पाता। महात्मा गांधी जैसे सरलतम रास्ता खोजने वाले मनुष्य का 'सत्य ही ईश्वर है 'के विचार सूत्र ने दुनिया के प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में ईश्वर को खोजने की मशक्कत जीवन भर करते रहने के बजाय सत्य की समझ का सहज सूत्र बताया। सत्य को जीवन भर अपने जीवन में हर समय अपने दैनिक जीवन की श्वास - प्रश्वास की तरह ही मानते हुए जीवन को ही जीवन्त सत्याग्रह की तरह अनोखी जीवन शैली में बदल दिया। सत्य को आत्मसात कर जीना सिखाया। सत्य और सत्याग्रह की सरलता को अपनाने का सादगीपूर्ण अहिंसक समाधान निकाला। सत्य और अहिंसा एक दूसरे में रचे-बसे है। सत्य और अहिंसा स्वावलंबी और प्राकृतिक स्वरूप में हर किसी के लिए सहज सरल है।सत्य और अहिंसा दोनों को अपनाने के लिए किसी संगठन, संस्था और सहयोगी साथी की भी जरूरत ही नहीं है। निर्भय होकर स्वावलंबी जीवन सत्यनिष्ठ और अहिंसक तरीके से जीना ही जीवन का प्राकृतिक स्वरूप है।

जीवन की जरूरत और लोभ लालच को समझाते हुए महात्मा गांधी ने कहा हमारी धरती मां में प्राणीमात्र की जरूरत पूरी करने की क्षमता है पर किसी एक के भी लोभ लालच को पूरा करने की नहीं। भोजन को लेकर गांधी ने सहज सूत्र समझाया ,भूख लगने पर खाना प्रकृति है और बिना भूख के खाना विकृति है। गांधी ने जीवन के सार के रूप में ही सत्य और अहिंसा को जाना समझा। साध्य और साधन की शुद्धता और मन की स्वच्छता की आजीवन साधना।गांधी अपने जीवन में न तो प्रशंसा से फूले और न हीं आलोचना या गाली पर ध्यान दिया। गांधी का मानना था कि किसीने आपको गाली दी और आपने गाली का प्रत्युत्तर दिया तो गाली देने वाले को सफलता मिली पर यदि आपने गाली पर ध्यान ही नहीं दिया तो गाली देने वाले की गाली निष्फल हो गई। यही व्यवहारिक एकाग्रता और ध्यान है। शुक्रवार तीस जनवरी 1948 की शाम प्रार्थना सभा में शामिल होने से साकार गांधी के शरीर को प्रणाम करने का स्वांग रचते हुए गोली मारनेवाले को भले ही रोका न जा सका हो पर' हे राम' शब्द का अंतिम उच्चारण कर महाप्रयाण पर जानेवाले निराकार गांधी के सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और अभय को लोकसमाज के मन से कोई भी व्यक्ति, समूह, संगठन और सभ्यता गोली और गाली के बल पर रोक या समाप्त नहीं कर सकती। यही सनातन सत्य है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

माखनलाल चतुर्वेदी: राष्ट्रीय पत्रकारिता का तेजोमय प्रखर स्वर

पुण्यतिथि पर विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय
लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

प्राथमिक शिक्षा के दौरान एक कविता पढ़ने को मिली थी, जिसका प्रेरक भाव मन-मस्तिष्क में आज भी अंकित है। न केवल वह कविता आज तक कंठस्थ है बल्कि वह महनीय रचनाकार का व्यक्तित्व और जीवन भी आंखों के सम्मुख चलचित्र की भांति वर्तमान है। वह कविता थी - 'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं, चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं.... मुझे तोड़ लेना वनमाली, देना उस पथ पर तुम फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पर जावें वीर अनेक। और रचनाकार हैं राष्ट्रवादी पत्रकारिता के शिखर पुरुष ओजस्वी वक्ता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी माखनलाल चतुर्वेदी। आज 30 जनवरी को देश पुण्यतिथि के अवसर पर उस महान संपादक और देश में पत्रकारिता के विद्यापीठ के स्वप्नकार के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित कर स्वयं गौरवांवित है।

माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय पत्रकारिता आकाश के उज्ज्वल नक्षत्र हैं। उनका विराट व्यक्तित्व विभिन्न छवियों के साथ लोक सम्मुख प्रकट होता है। एक ओर वह शिक्षण परम्परा को गति देते दिखाई पड़ते हैं तो वहीं दूसरी ओर उनका साहित्यकार रूप हमें सम्मोहित करता है। वह जितनी भाव प्रवणता, करुणा, प्रेम एवं संवेदनशीलता के साथ काव्य कला के क्षेत्र में विचरण करते हैं, वहीं साहित्यिकता, संवेग, वैदुष्य, आंचलिकता, सरसता एवं आत्मीयता की भावना सहेजे गद्य के फलक पर भी ओज-तेज अग्नि धर्मा लेखन के साथ विद्यमान हैं। वह स्वतंत्रता सेनानी के रूप में ब्रिटिश सत्ता के अन्याय, अत्याचार एवं दमन नीति के विरुद्ध शंखनाद कर जूझते हैं, वहीं संपादक के रूप में आग उगलते संपादकीय एवं लेखों के माध्यम से सम्पूर्ण समाज के मानस को उद्वेलित, प्रेरित एवं जाग्रत करते हैं। एक ओर वह लाल, बाल, पाल नाम से विख्यात त्रिरत्न लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक एवं बिपिन चंद्र पाल की विचार सरिता में अवगाहन कर अंग्रेजों के विरुद्ध सतत संघर्ष की हुंकार भरते हैं तो वहीं वह स्वयं में गांधी के सत्य, प्रेम एवं अहिंसा की प्रवहमान धारा का अनुभव करते हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में एक ओर जहां ओज-तेज की प्रखरता है, शत्रु विनाश का लक्षित संधान है तो वहीं दूसरी ओर पृष्ठ-दर-पृष्ठ सत्य, शांति, सदाचार, करुणा एवं मानवता के रुचिर मार्मिक चित्र भी दृष्टव्य हैं। समग्रता में देखें तो माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्य प्रकृति के प्रति आत्मीयता एवं सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति प्रेम का आख्यान है। वहां ब्रिटिश दासता से मुक्ति का आह्वान है तो सुप्त जन मानस के लिए प्रेरणा भरी ललकार भी। वह अपनी लेखनी से प्रभाती गाते हैं और उगते सूर्य की आराधना भी। वह ओजस्वी वक्ता के रूप में श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने की कला में पारंगत हैं तभी तो गांधी उनकी वक्तृत्व कला की सराहना करते हुए कहते हैं कि हम लोग तो केवल बातचीत करते हैं, भाषण तो माखनलाल चतुर्वेदी जी करते हैं। गांधी जी हृदय से उनको मानते थे तभी तो वे उनके जन्म स्थान बाबई, होशंगाबाद पधार कर उस माटी को प्रणाम किया था जिसने देश में राष्ट्रीयता की भावना का ज्वार उठाने वाला लाल उत्पन्न किया था।

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, 1889 को वर्तमान मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई ग्राम में शिक्षक पिता नंदलाल चतुर्वेदी के घर हुआ था। पिता के मार्गदर्शन में घर पर ही हिंदी, संस्कृत, बांग्ला, गुजराती और अंग्रेजी भाषा का अभ्यास कर समान अधिकार प्राप्त कर केवल 16 वर्ष की अवस्था में 8 रुपए मासिक वेतन पर शिक्षक के रूप में काम करना प्रारंभ किया था। उसके एक वर्ष पूर्व 1904 में आपका विवाह हो चुका था। शिक्षक के रूप में आप बच्चों के प्रिय शिक्षक रहे। शिक्षण के साथ लेखनी भी गतिशील रही। 1908 में 'हिंद केसरी' अखबार द्वारा 'राष्ट्रीय आंदोलन एवं बहिष्कार' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी छाप छोड़ी। 1913 में खंडवा से 'प्रभा' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ तो शिक्षक की नौकरी छोड़ संपादक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। प्रभा पत्रिका गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रताप प्रेस में छपने के कारण आपका परिचय विद्यार्थी जी से हुआ और जब 1916 में कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हुआ तो विद्यार्थी जी के साथ आपकी भेंट महात्मा गांधी और कवि मैथिलीशरण गुप्त से हुई। आप गांधी विचार से प्रभावित हो उनके आंदोलनों में सहभागिता करने लगे। असहयोग एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन में आपको कारावास हुआ। इसी बीच 'कर्मवीर' समाचार पत्र का संपादन दायित्व भी संभाला। गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रख्यात पत्र 'प्रताप' का संपादन दायित्व भी तब हाथ में लिया था, जब विद्यार्थी जी को जेल में बंद कर दिया गया था। अपने लेखों में अंग्रेजी नीति के विरोध एवं जनता को आंदोलन करने हेतु प्रेरित करने वाली सामग्री छापने के कारण आपके कार्यालय अर्थात् घर पर अर्धशताधिक बार छापा डाला गया। पर निर्भय स्वभाव वाले माखनलाल न डरे, न झुके बल्कि हर बार नयी ऊर्जा एवं ऊष्मा के साथ प्रकट हुए।

माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्यिक अवदान के लिए 1943 में देव पुरस्कार, 1955 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1959 में सागर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट. की मानद उपाधि, 1963 में पद्मभूषण आदि सम्मान प्रदान किये गये। 1967 में संसद द्वारा राजभाषा हिंदी संशोधन बिल के विरोध में आपने पद्मभूषण अलंकरण राष्ट्रपति महोदय को वापस कर दिया था, जो आपकी हिंदी के प्रति अविचल निष्ठा एवं सेवा का जीवंत प्रमाण है। हिम किरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चारण, समर्पण, समय के पांव, साहित्य के देवता आदि प्रमुख कृतियां हैं। मां भारती का यह साहित्य साधक पुत्र 30 जनवरी, 1968 को भोपाल में इस माटी को अंतिम प्रणाम कर परलोक गमन कर गया। सरकार ने 1977 में उनकी स्मृति में 25 पैसे का एक डाक टिकट जारी कर श्रद्धांजलि अर्पित की। भोपाल में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना कर उनका स्वप्न साकार किया। माखनलाल चतुर्वेदी हमारे मन-मस्तिष्क में सदैव बसे रहेंगे।

नजरिया

चित्रा माली
सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र,कोलकाता

गांधी हत्या के प्रयास और विचारों की अमरता

कस्तूरबा भी उनके साथ थी। शाम 7 बजकर 25 मिनिट पर जैसे ही एक कार सभागार के नजदीक आयी लड़को के स्काउड बैंड ने स्वागत धुन बजाई जैसे ही संगीत शुरू हुआ सभागार की ऊपरी मंजिल से एक बम फेंका गया, जो कार पर न लग कर कार से दूर सड़क पर जा गिरा और फट गया जिससे पांच लोग घायल हो गए। यह बम गांधी जी को लक्ष्य करके फेंका गया था लेकिन गांधी दूसरी कार में सवार थे जो बम फटने के तीन मिनिट बाद पहुंची थी। जिससे गांधी हत्या की यह योजना असफल रही। बॉम्बे क्रोनिकल ने अगले दिन अपने संपादकीय में लिखा कि ये बात ठीक है कि गांधी सुरक्षित है लेकिन 'हर भारतीय का सिर इस घटना से शर्म से झुक जाना चाहिए, क्योंकि यह तय है कि यह कृत्य किसी भारतीय का है और यह उस भारतीय का है जिसने किसी ऐसे व्यक्ति की जान लेने के शैतानी विचार को आत्मसात कर लिया है जिसने अपने देशवासियों की सेवा में शुद्ध अंतर्मन और समर्पण भाव से किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में खुद को ज्यादा झोंक दिया है '।

भारत में गांधी जी की हत्या का पहला प्रयास 1934 में किया गया था जब वे अछूतों के उद्धार के लिए कार्य कर रहे थे और हिंदू मंदिरों में अछूतों के प्रवेश के लिए प्रयास कर रहे थे। उनके इन प्रयासों को हिंदू धर्म विरोधी करार दिया गया और हिंदू धर्म को अपवित्र करने, वर्ण व्यवस्था व मंदिरों के नियमों के साथ छेड़छाड़ करने के आरोप भी उन पर लगाए गए। गांधी जी को पूना के नगरपालिका भवन में एक सभा में शामिल होना था। कस्तूरबा भी उनके साथ थी। शाम 7 बजकर 25 मिनिट पर जैसे ही एक कार सभागार के नजदीक आयी लड़को के स्काउड बैंड ने स्वागत धुन बजाई जैसे ही संगीत शुरू हुआ सभागार की ऊपरी मंजिल से एक बम फेंका गया, जो कार पर न लग कर कार से दूर सड़क पर जा गिरा और फट गया जिससे पांच लोग घायल हो गए। यह बम गांधी जी को लक्ष्य करके फेंका गया था लेकिन गांधी दूसरी कार में सवार थे जो बम फटने के तीन मिनिट बाद पहुंची थी। जिससे गांधी हत्या की यह योजना असफल रही। बॉम्बे क्रोनिकल ने अगले दिन अपने संपादकीय में लिखा कि ये बात ठीक है कि गांधी सुरक्षित है लेकिन 'हर भारतीय का सिर इस घटना से शर्म से झुक जाना चाहिए, क्योंकि यह तय है कि यह कृत्य किसी भारतीय का है और यह उस भारतीय का है जिसने किसी ऐसे व्यक्ति की जान लेने के शैतानी विचार को आत्मसात कर लिया है जिसने अपने देशवासियों की सेवा में शुद्ध अंतर्मन और समर्पण भाव से किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में खुद को ज्यादा झोंक दिया है'। इस घटना के बाद गांधी जी ने एक प्रेस वक्तव्य जारी किया जिसमें कहा कि 'इस दुखद घटना ने निश्चय ही हरिजन हित के लिए किए जा रहे कार्यों को मजबूती प्रदान की है'। उन्होंने आगे कहा 'मैं बलिदान का अभिनय नहीं कर रहा हूं, लेकिन वह मेरे रास्ते में आता है तो मैं बिल्कुल उसके योग्य साबित होऊंगा और भविष्य के इतिहासकारों के लिए यह कहना संभव होगा कि मैंने हरिजनों के समक्ष जो प्रतिज्ञा ली थी कि छुआछूत को हटाने के लिए जरूरत पड़ने पर मैं अपने प्राण तक दे दूंगा,तो वह प्रतिज्ञा मैंने पूरी कर दी है'। गांधी जी ने अपने समर्थकों से कहा कि वे संयम रखें। सुधारकों को बम फेंकने वालों या उसके षड्यंत्रकारियों पर क्रोधित नहीं होना चाहिए। बल्कि हमें अपने प्रयासों को दुगना कर देश को छुआछूत के खतरनाक दानव से मुक्ति दिलानी चाहिए। इसके पूर्व दक्षिण अफ्रीका में भी गांधी जी पर तीन जान लेवा हमले हो चुके थे। भारत और दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी गैर-बराबरी और असमानता को खत्म करने के लिए सत्याग्रह कर रहे थे। सत्य का आग्रह लेकिन समाज के ऊपरी हिस्से या कहे प्रिविलेज तबके को यह बात नागवारा गुजरी और गांधी जी की हत्या के षड्यंत्र रचे जाने लगे। वहीं कुछ फिल्ममेकर गांधी द्वारा संचालित इन कार्यों पर फिल्म का निर्माण कर गांधी जी के विचारों का प्रचार प्रसार कर रहे थे। इनकी फिल्मों में नायक को गांधीवादी मूल्यों के लिए संघर्ष करते हुए,सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए और गांधी की तरह वेशभूषा धारण किए हुए देखा जा सकता है। मैं यहां सिर्फ एक फिल्म 'अछूत कन्या' का उदाहरण ले रही हूं जो 1936 में प्रदर्शित हुई थी। यह फिल्म बॉम्बे टॉकीज निर्मित और फ्रेंज ऑस्टन द्वारा निर्देशित है। इसमें मुख्य भूमिका में देविका रानी और अशोक कुमार थे। इस फिल्म में उच्चवर्गीय ब्राह्मण लड़के और निम्नवर्गीय अछूत लड़की के प्रेम की कहानी को प्रदर्शित किया गया है। लेकिन इसी के साथ इस फिल्म में छुआछूत के अमानवीय कृत्य को बड़ी तीव्रता से उकेर कर उसकी आलोचना की गई है जो उस दौर में आसान नहीं था। नायक (प्रताप) का पिता जो छोटा सा व्यापारी है लेकिन सदाचारी और ईमानदार है जो छुआछूत की अमानवीय प्रथा को न मानकर मानवीय आधार पर एक अछूत (नायिका के पिता) से दोस्ती निभाता है। गांव के कुछ लोगों को मोहन और दुखिया की दोस्ती से ऐतराज था। इस दोस्ती को वे धर्म और समाज के विरुद्ध क़रार देते है और इसी वजह से मोहन को मारने की कोशिश की जाती है,आजीविका के साधन दुकान और घर को भी जला दिया जाता है। मोहन भी गांधी जी की तरह ह्रदय परिवर्तन की अवधारणा में यकीन करता है और उपद्रवियों के खिलाफ दर्ज पुलिस कंप्लेन को वापस ले लेता है। फिल्म में गांधी जी के द्वारा अछूतों के उद्धार और मानवता

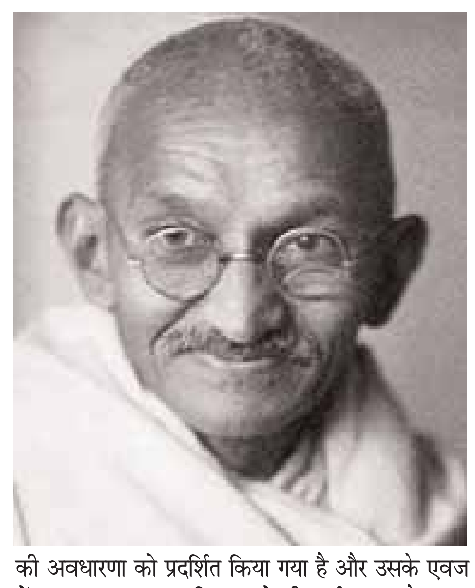

की अवधारणा को प्रदर्शित किया गया है और उसके एवज में समाज द्वारा प्रदान प्रतिसाद को भी दर्शाया गया है।

गांधी जी पर दूसरा हमला 1944 में पंचगनी में प्रार्थना सभा के दौरान हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार एक चार्टर्ड बस में सवार होकर पच्चीस नौजवान पूना से पंचगनी पहुंचे और प्रार्थना सभा से पहले इन्होंने पूरे शहर में घूम-घूमकर गांधी विरोधी नारे लगाए और इनमें से एक युवक हाथ में खंजर लिए 'गांधी मुर्दाबाद' का नारा लगाते हुए गांधी जी की ओर दौड़ा जिसे सतारा के डी.भिलारे गुरुजी और पूना के मणिशंकर पुरोहित ने पकड़ लिया। गांधी जी इस आरोपी से बात करना चाहते थे उन्होंने उससे आग्रह किया कि वह उनके साथ आठ दिन बिताए ताकि वे उसका दृष्टिकोण समझ सकें। जिसे आरोपी ने अस्वीकार कर दिया। आरोपी को पुलिस के हवाले करने की बात हुई थी लेकिन उदार ह्रदय गांधी ने उसको आजादी के साथ वहां से चले जाने की इजाज़त दे दी थी। इस घटना के दो महीने बाद नौजवानों का एक समूह सेवाग्राम आश्रम पहुंचा और इन्होंने गांधी जी को जिन्ना से नहीं मिलने देने की सार्वजनिक शपथ ली। गांधी जी को आश्रम से बाहर जाने से रोकने के लिए इन्होंने आश्रम के द्वार को घेर लिया। पुलिस द्वारा जब इन्हें गिरफ्तार कर तलाशी ली गई तो एक व्यक्ति के पास 7 इंच लंबा और पैना चाकू बरामद हुआ। इसके बाद जून 1946 में गांधी जी जिस (गांधी स्पेशल) ट्रेन से पूना जा रहे थे उसे पटरी से उतारकर दुर्घटनाग्रस्त करने का प्रयास किया गया था। नेरुल और कर्जत स्टेशन के बीच पटरियों पर बड़े-बड़े पत्थर रख दिए गए थे जिससे ट्रेन पटरी से उतर जाए। ट्रेन चालक की सूझबूझ से बड़ी दुर्घटना को कम क्षति में तब्दील कर दिया गया था। जो सीधा कहीं दर्ज नहीं है लेकिन इस ट्रेन के अलावा अन्य कोई ट्रेन या मालगाड़ी इस रूट से गुजरने वाली नहीं थी इसलिए इस दुर्घटना को गांधी की हत्या की साजिश के तौर पर देखा गया। 20 जनवरी 1948 को गांधी जी ने प्रार्थना सभा में कहा कि वे पाकिस्तान जाना चाहते हैं, लेकिन ऐसा तभी हो सकता है जब वहां की सरकार को मेरे आने से आपत्ति न हो।

जब वे ऐसा बोल रहे थे तभी बाहर बम धमाका हुआ जो प्रार्थना सभा से 200 मीटर की दूरी पर था। इस धमाके ने मनु समेत कई लोगों को डरा दिया जो गांधी जी के समक्ष बैठे थे लेकिन गांधी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। जब शोर-शराबा कम हुआ तो उन्होंने फिर से अपना भाषण शुरू कर दिया। इस घटना की जांच में मदनलाल पाहवा को दोषी पाया गया। पाहवा गांधी के शांति आंदोलन का विरोधी था क्योंकि वह पश्चिमी पंजाब में अपना सब कुछ खो चुका था। वह मोंटगोमरी जिले का रहने वाला शरणार्थी था जो पहाड़गंज की मस्जिद में रह रहा था। इस घटना के बाद नेहरू खुद बिड़ला हाउस पहुंचे और गांधी जी से मुलाकात की ओर पुलिस अधिकारियों से भी इसकी जानकारी ली। इन असफल प्रयासों के बाद 30 जनवरी 1948 को शाम 5 बजकर 17 मिनिट पर आखिरकार साम्प्रदायिक ताकतों का प्रयास सफल हुआ और गांधी जी की हत्या कर दी गई। गांधी प्रार्थना सभा के सभा स्थल की ओर बढ़ रहे थे तभी अचानक हमलावर उनके सामने प्रकट हुआ और उसने पिस्तौल निकली और उन पर नजदीकी से तीन गोलियां दाग दी। उनमें से एक गोली गांधी की छाती में लगी और शेष दो गोलियां उनकी पसलियों में धंस गई। गांधी वहीं जमीन पर गिर गए और उनके मुख से अंतिम वाक्य 'हे राम' निकला। भीड़ ने आरोपी को पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। जिससे हम सभी वाकिफ़ है। इन साम्प्रदायिक ताकतों के विस्तार को और नौजवानों में इसके प्रभाव को 'फ्रीडम एट मिडनाईट' के सीजन दो में देखा जा सकता है (सोनी लीव ओटीटी प्लेटफार्म)। कैसे महात्मा गांधी उनके विचारों और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की अवधारणा के खिलाफ इन्हें भड़काया जा रहा था, प्रशिक्षित किया जा रहा था इसमें प्रदर्शित किया गया है। गांधी की हत्या के आरोपी ने गिरफ्तारी के बाद नेहरू के सुरक्षा प्रमुख जी.के.हांडू के सामने कबूल किया था कि गांधी के बाद उनके अगले निशाने पर नेहरू थे। गांधी ने पहले कई बार लिखा था कि वह अपने लिए एक हिंसक मृत्यु की उम्मीद कर रहे हैं। ऐसी ही उम्मीद उनके पुराने सहयोगी हेनरी पोलक भी कर रहे थे,हालांकि उन्होंने ये बातें सार्वजनिक तौर पर कभी व्यक्त नहीं की थीं।

पोलक ने अपने मित्र को एक पत्र लिखा जिसमें गांधी जी के संदर्भ में उन्होंने लिखा कि 'उनमें आम लोगों के लिए खुद को कुर्बान करने की गंभीर प्रवृति है और मुझे कभी भी इस बात की निश्चितता नहीं लगती है कि उनकी मृत्यु हुई तो वो सामान्य हालात में होगी। मुझे लगता है उनकी मृत्यु अत्यधिक नाटकीय तरीके से होगी।

पुण्यतिथि पर विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

इसलिए फिल्मकारों के प्रिय रहे हैं महात्मा गांधी

सन् 1982 में दिग्गज ब्रिटिश फिल्मकार सर रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गांधी' ने पूरी दुनिया में न केवल नाम कमाया बल्कि दौलत भी बटोरी। 'गांधी' की धाक का प्रमाण उसे ग्यारह नामांकनों में से मिले आठ एकेडमी पुरस्कार (ऑस्कर) हैं। महात्मा गांधी के अहिंसा, सत्याग्रह, स्वतंत्रता, समानता जैसे अनेक विचारों, सिद्धांतों और संदेशों से प्रेरित कई फिल्में बनीं। बहुत से महान फिल्मकार गांधी दर्शन से प्रभावित थे, इसलिए सामाजिक सरोकारों के मुद्दों को सामने लानेवाली अधिकांश फ़िल्मों में गांधी जी की स्पष्ट छाप नजर आती है। गांधी जी की महानता का उदाहरण है कि जिन अंग्रेज़ों के खिलाफ गांधी जी ने सफल अहिंसक आंदोलन चलाया और भारत को आजादी मिली, उन्हीं गांधी जी की शानदार बॉयोपिक 'गांधी', एक ब्रिटिश फिल्मकार रिचर्ड एटनबरो ने बनाई। बापू अपने करिश्माई व्यक्तित्व से जन-जन के दिलों में ही नहीं, दुनिया के हर वर्ग में अपार प्रेम और सम्मान अर्जित कर चुके थे।

लंदन में 22 सितंबर 1931 को गांधी जी और उम्र में उनसे बीस साल छोटे महान फिल्मकार चार्ली चैपलिन की मुलाकात हुई। चैपलिन की 'मॉडर्न टाइम्स' (1936) और 'द ग्रेट डिक्टेटर' (1940) जैसी फ़िल्मों में गांधी जी का प्रभाव साफ़ नज़र आता है। विख्यात अमेरिकन फ़िल्म एक्टर डगलस फेयरबैंक्स ने 1931 में भारत यात्रा के दौरान अपने एक इंटरव्यू में महात्मा गांधी और जॉर्ज वाशिंगटन की तुलना की थी।

सन् 1921 में कांजीभाई राठौड़ द्वारा निर्देशित मूक फिल्म 'भक्त विदुर' ऐसी पहली फिल्म थी जिसे ब्रिटिश हुकूमत ने महात्मा गांधी से समानता के कारण और राजनीतिक असंतोष फैलने की आशंका के चलते प्रतिबंधित कर दिया था। इस फिल्म में द्वारकादास संपत द्वारा निभाए गए विदुर के पात्र का चित्रण और पहनावा गांधी जी की तरह किया गया था। अंग्रेजों को यह कैसे रास आता? सन् 1931 में जातिप्रथा पर तीखा प्रहार करनेवाली फिल्म 'खुदा की शान' में एक साधु के पात्र को गांधी जी जैसा दिखाया गया। फिल्म ने सेंसर बोर्ड की नाराजगी झेली।

दक्षिण भारतीय फ़िल्मों में भी गांधी जी का बहुत प्रभाव पड़ा। 1936 से 1946 के बीच के. सुब्रमण्यम ने जाति व्यवस्था की कुरीतियों और सामाजिक सुधार के विषयों पर 'बालयोगिनी', 'सेवासदनम', 'मानसंरक्षणम', 'त्यागभूमि' जैसी फिल्में बनाकर विशेष सामाजिक वर्ग की नाराजगी मोल ली। 1940 में बी. एन. रेड्डी ने तेलुगु फ़िल्म 'सुमंगली' में विधवा पुनर्विवाह की वकालत की। उन्होंने 1939 की अपनी पहली फ़िल्म 'वंदे मातरम् (मंगलसूत्रम्)' में सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आंदोलन के विषय उठाए।

बंगाली, हिन्दी और दूसरी भाषाओं की फ़िल्मों ने भी महात्मा गांधी के स्वाधीनता आंदोलन में सामाजिक सुधारों को रेखांकित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल में 'चंडीदास' (1932), 'विद्यापति' (1937), 'अधिकार' (1938) ने प्रगतिशील सामाजिक सुधारों का समर्थन किया तो महाराष्ट्र की प्रभात फिल्म कंपनी ने 'शेजारी', 'पड़ोसी', 'कुंकू',

'दुनिया न माने', 'मानुष' आदि बनाईं। ए. के. चेट्टियार की 'महात्मा गांधी : बीसवीं सदी का मसीहा' को गांधी जी पर बनी पहली डॉक्युमेंट्री फिल्म माना जाता है। गांधी जी के जीवनकाल से लेकर अभी तक उनसे प्रेरित फिल्में बनाई जा रही हैं। ऐसी कई फ़िल्मों में से 'अछूत कन्या' (1936), 'एक ही रास्ता' (1956), 'सुजाता' (1959), 'सरदार' (1993), 'द मेकिंग ऑफ द महात्मा' (1996), 'हे राम' (2000), 'मैंने गांधी को नहीं मारा' (2005), 'लगे रहो मुन्ना भाई' (2006), 'गांधी, माय फादर' (2007), 'गांधीगिरी' (2016), 'अहिंसा गांधी : द पॉवर ऑफ द पॉवरलेस' (2020), 'गांधी गोडसे-एक युद्ध' (2023) इत्यादि सभी को याद हैं।

बापू के लिए फ़िल्मकारों के मन में अपार प्रेम और श्रद्धा थी। भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत के बाद 1943 में गांधी जी के आमरण अनशन के समय उनके जीवन और स्वास्थ्य के लिए इंडियन मोशन पिक्चर्स प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन द्वारा रंजीत स्टूडियो, मुंबई (तब बॉम्बे) में प्रार्थना सभा आयोजित की गई थी जिसमें पृथ्वीराज कपूर और चंदूलाल शाह जैसे दिग्गजों ने भाषण दिया था। गांधी जी का सिनेमा से कोई सीधा संबंध नहीं था लेकिन उन्होंने मुंबई के एम्पायर, एक्सेल्सियर और ओपेरा हाउस में स्थानीय संस्थाओं द्वारा विभिन्न कारणों से आयोजित गैर-फिल्मी आयोजनों में शिरकत की थी। फिल्मी गीतों में भी बापू को खूब याद किया गया है। 'दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल' (जागृति), 'मेरी आवाज सुनो' (नौनिहाल) या 'बंदे में था दम' (लगे रहो मुन्ना भाई) उदाहरण मात्र हैं। गांधी जी की हत्या के हफ्ते भर बाद राजेंद्र कृष्ण के लिखे, हुस्नलाल भगतराम के संगीत निर्देशन में मोहम्मद रफी के गाये गीत 'बापू की अमर कहानी' द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी गई थी। 1948 में ही एस. डी. बर्मन द्वारा रेकॉर्ड किए गए दो गीत, 'गुण धाम हमारे गांधी जी' और 'सब देश की जनता तुम्हें रो रो के पुकारे' 2007 में रिलीज हुए। दिग्गज निर्देशक श्याम बेनेगल के अनुसार गांधी जी अपने समय में सबसे अधिक फिल्माई गई हस्ती हैं। उनमें वे सभी गुण हैं जो दर्शक मानव मात्र में देखना चाहते हैं। प्रसिद्ध फ़िल्मकार अदूर गोपालकृष्णन कहते हैं कि गांधी जी जब भी स्वतंत्रता आंदोलन के लिए निकलते थे, वे पसंद करें या नहीं, कैमरा उन्हें रिकॉर्ड करता था क्योंकि तब इतिहास घटित हो रहा होता था।

सिनेमा संसार के प्रिय होने के बावजूद गांधी जी फ़िल्मों के प्रति नकारात्मक रवैया रखते थे। वे सिनेमा को पापपूर्ण तकनीक, भ्रष्ट प्रभाव डालने वाला, अनैतिकता को बढ़ावा देने वाला, समय की बर्बादी और आत्म-संयम नष्ट करने वाला कहते थे। वे अपने विचारों पर कायम रहे। इसलिए विशेष आग्रह पर कुछ देर के लिए ही सही, उनका दो फ़िल्में, 'मिशन टू मॉस्को' (1943) और 'रामराज्य' (1944) को देखना, अनोखी घटना कही जाएगी। गांधी जी भले ही सिनेमा के विरोधी रहे हों परंतु फ़िल्मों पर उनकी छाप अमिट है।

ब्रिटिश सरकार ने 1927-28 में दर्शकों पर सिनेमा के प्रभाव और उपयोगिता का अध्ययन करने के लिए कमेटी बनाई। कमेटी ने गांधी जी से भी विचार जानना चाहे, तब भी उनका उत्तर सिनेमा के पक्ष में नहीं था। 1937 में टी. रंगाचारीयर की अध्यक्षता में एक कमेटी बनी। सिनेमा उद्योग को गांधी जी के विचारों से नैतिक आधार दिलाने के लिए दादा साहब फाल्के, वी. शांताराम, महबूब खान आदि फ़िल्मकारों की पहल पर एक प्रश्नावली बापू को भेजी गई। गांधी जी ने पुनः अपनी अस्वीकृति दर्शाते हुए कहा कि सिनेमा का बुरा प्रभाव स्पष्ट है, अच्छाई, यदि कोई हो, तो सिद्ध करना बाकी है। गांधी जी की इकहत्तरवीं जन्म वार्षिकी पर प्रख्यात साहित्यकार ख़्वाजा अहमद अब्बास ने बापू कहकर संबोधित करते हुए उनसे सिनेमा के प्रति अपने विचारों में बदलाव लाने का अनुरोध किया था।

यह महात्मा गांधी का नैतिक बल ही है जिसने बड़ी हस्तियों के आग्रह के बाद भी सिनेमा के प्रति उनके विचारों में कोई बदलाव नहीं आने दिया। और, यह दर्शकों की श्रद्धा है जो गांधी दर्शन को पर्दे पर देखते हुए नहीं अघाते।

मुझे मुंबई के 'भारतीय सिनेमा के राष्ट्रीय संग्रहालय' में घूमते हुए इस लेख के लिए प्रेरणा और जानकारियाँ मिलीं जहां 'रामराज्य' फिल्म की क्लिपिंग देखते हुए महात्मा गांधी की सुंदर और जीवंत आदमकद प्रतिमा बनाई गई है।

गांधी निर्वाण दिवस

प्रक्षाली देसाई
लेखक गांधी मार्ग अध्येता हैं।

लेट्स किल गांधी: अफवाहों के दौर में सत्य से परिचित करवाती पुस्तक

30 जनवरी के दिन, गांधी निर्वाण दिवस के अवसर पर, एक पुस्तक की चर्चा करना आवश्यक है। यह आवश्यकता इसलिए है क्योंकि महात्मा गांधी की हत्या को आज हत्या के रूप में स्वीकार ही नहीं किया जा रहा। पूरे हत्याकांड को अत्यंत हल्के शब्दों में यह कहकर टाल दिया जाता है कि जिसने यह जघन्य अपराध किया, वह व्यक्ति क्षणिक आवेश में आकर ऐसा कर बैठा। इतिहास के तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर नई पीढ़ी के सामने इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है कि अंततः हत्या का शिकार ही दोषी ठहरा दिया जाए। पूज्य बापू के प्रति नफरत फैले, उनके विचारों की धरोहर धीरे-धीरे समाप्त कर दी जाए और मोहनदास करमचंद गांधी को देश के विभाजन का दोषी तथा किसी विशेष समुदाय का तुष्टीकरण करने वाला व्यक्ति सिद्ध किया जाए। इस प्रक्रिया के माध्यम से जनमानस का ब्रेनवॉश हो और नफरत की राजनीति निरंतर चलती रहे। धर्म के नाम पर राजनीति करते हुए एक सड़ी-गली ब्राह्मणवादी मानसिकता को पोषित किया जाए और अंततः समाज एक तानाशाह की जी-हजूरी करने लगे।

पूज्य बापू के वंशज तुषार गांधी द्वारा लिखित पुस्तक 'लेट्स किल गांधी' इसी पृष्ठभूमि में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पुस्तक अब तक अंग्रेज़ी और मराठी में उपलब्ध थी। कुछ समय पूर्व इसका गुजराती अनुवाद 'गांधी नो हत्यारों गोडसे' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है, जिसे गुजरात के श्री केयूर कोटक ने प्रकाशित किया।

प्रकाशन के अवसर पर तुषार गांधी ने गहरी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि यह पुस्तक सबसे पहले गुजराती भाषा में आनी चाहिए थी, परंतु गुजरात के किसी भी प्रकाशक ने इसे प्रकाशित करने का साहस नहीं दिखाया। प्रारंभ में सकारात्मक उत्तर दिए गए, किंतु बाद में प्रकाशन टाल दिया गया। उन्होंने यह भी बताया कि जब वे गांधी हत्या और नाथूराम गोडसे पर चले मुकदमों से संबंधित दस्तावेज़ खोजने के लिए सरकारी अभिलेखागार पहुँचे, तो उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों और अवरोधों का सामना करना पड़ा। यह पुस्तक गांधीजी की हत्या के षड्यंत्र, उससे जुड़े भ्रमों और वर्षों तक दबाए गए सत्यों का तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है। हत्या को एक व्यक्ति की वैचारिक असहमति और तात्कालिक क्रिया के रूप में प्रस्तुत करना एक भयावह झूठ है। ऐसा झूठ समाज को किस दिशा में ले जाएगा, यह प्रश्न गंभीर है। सच के पक्ष में खड़े होने और प्रश्न उठाने का साहस ही समाज को मजबूत बना सकता है। यही इस आलेख का उद्देश्य है।

गांधीजी की हत्या सत्य, अहिंसा और नैतिक राजनीति पर किया गया एक संगठित हमला थी। यह पुस्तक उस असहज सत्य को सामने लाने का साहस करती है, जिसे दशकों तक या तो जानबूझकर छिपाया गया या फिर झूठे नैरेटिव के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह पुस्तक वर्षों से स्थापित कथाओं को चुनौती देती है।

यह आलेख हत्या के संगठित षड्यंत्र, पुलिस एवं राजनीतिक तंत्र की विफलता तथा कपूर आयोग के निष्कर्षों का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह हत्या भारतीय लोकतंत्र, नैतिक राजनीति और सार्वजनिक स्मृति की दिशा तय करने वाला एक निर्णायक मोड़ थी। समस्या केवल यह नहीं थी कि बापू का देहांत हुआ, बल्कि यह थी कि हत्या के सत्य को नियंत्रित किया गया।

फैलाए गए प्रमुख भ्रम

- सबसे बड़ा भ्रम यह है कि यह हत्या एक व्यक्ति की सनक थी।

कपूर आयोग (1966-69) स्पष्ट करता है कि यह हत्या पूर्व-नियोजित थी और कई लोगों की जानकारी में थी। आयोग के अनुसार, सावरकर सहित कई व्यक्तियों की भूमिका संदिग्ध थी। आयोग ने कहा कि 'सभी तथ्य

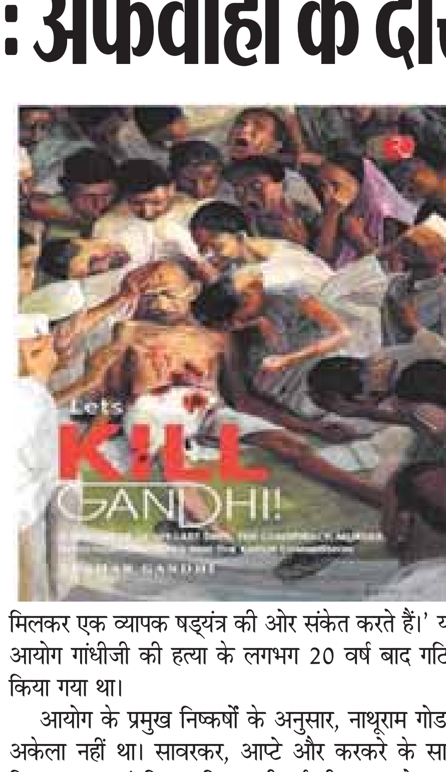

मिलकर एक व्यापक षड्यंत्र की ओर संकेत करते हैं।' यह आयोग गांधीजी की हत्या के लगभग 20 वर्ष बाद गठित किया गया था।

आयोग के प्रमुख निष्कर्षों के अनुसार, नाथूराम गोडसे अकेला नहीं था। सावरकर, आप्टे और करकरे के साथ मिलकर एक संगठित साजिश रची गई थी। हत्या से पहले कई बैठकें हुईं, हथियार का चयन किया गया और पलायन की योजना बनाई गई। यह भी पूर्व-निर्धारित किया गया था कि हत्या करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का बयान देगा।

पहले मुकदमे में साक्ष्यों के अभाव के कारण पूरा सच सामने नहीं आ पाया। 'Let's Kill Gandhi' इस देरी को भी षड्यंत्र का हिस्सा मानती है। कपूर आयोग ने यह संकेत भी दिया कि गांधीजी को जानबूझकर एक निष्प्रभावी, भावुक और मात्र प्रतीकात्मक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया।

आज की राजनीति में गांधीजी का नाम सुविधा के अनुसार लिया जाता है। उनके नैतिक साहस, तानाशाही-विरोध और सामाजिक न्याय के विचारों को दरकिनार कर अहिंसा को कायरता, सहिष्णुता को तुष्टीकरण और नैतिकता को अव्यावहारिकता कहा गया। यही वही मानसिकता है जिसने कभी गांधीजी को 'राष्ट्र के लिए खतरा' बताया था।

यह पुस्तक एक गंभीर प्रश्न उठाती है–क्या देश गांधीजी की हत्या का पूरा सच जानने के लिए तैयार था? या फिर सत्ता और समाज दोनों को एक सुविधाजनक कहानी चाहिए थी?

प्रारंभिक जाँच में कई सुरागों को आगे नहीं बढ़ाया गया। कुछ गवाहों के बयान बदले गए, कई दस्तावेज़ 'गुम' घोषित कर दिए गए। कपूर आयोग ने संकेत दिया कि यदि समय पर निष्पक्ष जाँच होती, तो कई चेहरे बेनकाब हो सकते थे। सबसे भयावह तथ्य यह है कि केस से संबंधित दस्तावेज़ सरकारी अभिलेखागार में जलाकर नष्ट कर दिए गए। यह इतिहास को नियंत्रित करने का प्रयास था, जिसने भविष्य के शोध और आने वाली पीढ़ियों से उत्तर जानने का अधिकार छीन लिया।

पुस्तक का केंद्रीय विचार यह भी है कि 30 जनवरी 1948 को बापू का शरीर तो मार दिया गया, लेकिन दशकों तक हत्यारों को वैधता मिलती रही और गांधीजी को केवल औपचारिक श्रद्धांजलियों तक सीमित कर दिया गया। यह वही स्थिति है जहाँ हत्यारे विचारधारा बन जाते हैं और शिकार केवल प्रतिमा रह जाता है।

क्या गांधीजी विभाजन के जिम्मेदार थे?

पुस्तक इस मिथक का खंडन करती है। वास्तविकता यह है कि गांधीजी अंत तक विभाजन के विरोधी रहे। उन्होंने पद और राजनीतिक समझौतों तक को ठुकरा दिया। विभाजन तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व की विफलता थी।

पुस्तक बताती है कि 1947-48 के दौरान गांधीजी पर हत्या के पाँच प्रयास हुए। 20 जनवरी 1948 को विस्फोट का प्रयास विफल रहा, फिर भी सुरक्षा नहीं बढ़ाई गई। यह केवल लापरवाही नहीं, बल्कि गहरी असंवेदनशीलता थी। पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने के प्रश्न पर भी गांधीजी के नैतिक और कानूनी आग्रह को 'राष्ट्रद्रोह' के रूप में प्रस्तुत किया गया।

गांधी और गोडसे के बीच वैचारिक संघर्ष स्पष्ट था। गांधी समावेशी भारत चाहते थे, जबकि गोडसे धार्मिक राष्ट्र की विचारधारा से प्रेरित था। गांधी नैतिक राजनीति और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की बात करते थे, जबकि गोडसे बहुसंख्यक वर्चस्व की राजनीति के समर्थक थे। यही वैचारिक टकराव हत्या की जड़ में था।

पुस्तक यह भी प्रश्न उठाती है कि गोडसे को अदालत में वैचारिक मंच देना उचित था या नहीं। उसने अपराध स्वीकार किया, फिर भी बिना किसी ग्लानि के लंबे बयान दिए गए, जिससे उसके महिमामंडन का मार्ग प्रशस्त हुआ। पुलिस और प्रशासनिक तंत्र की विफलता भी स्पष्ट थी। सावरकर के विरुद्ध परिस्थितिजन्य साक्ष्य थे, फिर भी वे बच निकले। न्यायिक और ऐतिहासिक सत्य अलग-अलग हो गए।

सरदार पटेल ने भी एक निजी पत्र में गृह मंत्री रहते हुए गांधीजी को न बचा पाने की आत्मग्लानि व्यक्त की थी। दस्तावेज़ों का नष्ट किया जाना लोकतंत्र, सत्य और शोध–तीनों के विरुद्ध अपराध था।

अंततः, 'लेट्स किल गांधी' और उसका गुजराती अनुवाद 'गांधी नो हत्यारो गोडसे' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि ऐतिहासिक सुधार का प्रयास है। 30 जनवरी को बापू को याद करना तभी सार्थक होगा जब हम भ्रम तोड़ें, षड्यंत्र को पहचानें और सत्य का साथ दें। गांधी को मारने वाले केवल 1948 में नहीं थे–सत्य को दबाने वाले हर युग में होते हैं। यदि हम इतिहास के साथ ईमानदार नहीं होंगे, तो गांधी केवल भाषणों और श्रद्धांजलि के चित्रों तक सीमित रह जाएंगे–और तब गांधी हर युग में बार-बार मारे जाते रहेंगे।

जी रामजी योजना को लेकर केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने गांव में चौपाल लगाकर जानकारी दी

प्रधानमंत्री मोदी की इस योजना के माध्यम से गांव का सर्वांगीण विकास होगा : सावित्री ठाकुर

धार। विकसित भारत गारंटी फार रोजगार एवं आजीविका मिशन ग्रामीण विधेयक 2025 के जी रामजी योजना विषय पर जन जागरण को लेकर धार समीप ग्राम तुर्क बगड़ी में बुधवार को केंद्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर व भाजपा जिलाध्यक्ष महंत नीलेश भारती ने गांव में चौपाल लगाकर ग्रामीणो को जानकारी दी।

इस दौरान जिला महामंत्री देवेंद्र सोनोने, टोली जिला संयोजक प्रेमचंद परमार,सह संयोजक कपिल निनामा एवं रविंद्र पाटीदार मंडल अध्यक्ष जीवन पटेल, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा मौजूद रहे।

सावित्री ठाकुर ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि विकसित भारत बनाने की गारंटी है जी रामजी योजना। यह अधिनियम विकसित भारत के लक्ष्य की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, जो मनरेगा की जगह लेगा और ग्रामीण विकास को गति देगा, भ्रष्टाचार पर

रोक लगाएगी तथा प्रधानमंत्री मोदीजी इस योजना के माध्यम से गांव में सर्वांगीण विकास होगा।

यह योजना ग्रामीण विकास को नई दिशा देने वाली महत्वाकांक्षी पहल है, जिसके तहत टिकाऊ संपत्ति निर्माण, आजीविका बढ़ाने वाली संपत्तियाँ, आपदा-प्रतिरोधी संरचनाएँ तथा विकास-केंद्रित आधुनिक निर्माण कार्य प्राथमिकता पर किए जाएंगे। ग्रामीण परिवारों को अकुशल शारीरिक श्रम के माध्यम से रोजगार प्रदान करना भी इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है।

महंत नीलेश भारती ने कहा कि इस योजना में कार्यदिवसों को 100 से बढ़ाकर 125 दिन किया गया है, जिससे ग्रामीणों को अतिरिक्त रोजगार और स्थिर आय सुनिश्चित होगी। जी रामजी योजना का लक्ष्य विकसित भारत 2047 के विज़न के अनुरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना है।

विधेयक भ्रष्टाचार मुक्त एवं बहुआयामी है। इस विधेयक से ग्रामों का समग्र विकास होगा, जिसके कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के सपने को साकार करने में सहायक होगा। विकसित भारत जी राम जी योजना से समस्त ग्राम पंचायत स्वावलंबी एवं सामर्थ्यवान होंगी।

इस अवसर पर चौपाल कार्यक्रम में किसान मोर्चा से मिठ्ठु लाल चावड़ा तुर्क बगड़ी सरपंच सहित बड़ी संख्या में माताएँ-बहनें, बच्चे व ग्रामवासी उपस्थित रहे।

नर्मदानंद बापजी की तृतीय पैदल मां नर्मदा प्रदक्षिणा सेवा यात्रा समापन ओंकारेश्वर में हुआ

राष्ट्र समर्पित यात्रा को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में मिला स्थान

धार। राष्ट्र समर्पित माँ नर्मदा की पावन परिक्रमा के संकल्प के साथ नर्मदा प्रदक्षिणा (तृतीय पदयात्रा) का शुभारंभ 5 अक्टूबर 2025, आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी को ओंकारेश्वर से किया गया था यह यात्रा पूर्णतः पैदल हुई, जिसकी कुल दूरी लगभग 3000 किलोमीटर थी। यात्रा का प्रारंभ ओंकारेश्वर (दक्षिण तद) से होकर खंभात की खाड़ी तक कि गई इसके पश्चात समुद्र पार कर गुजरात के दहेज (उत्तर तट) से यात्रा आगे बढ़ते हुए माँ नर्मदा के उदम स्थल अमरकंटक पहुंची, जहां से पुनः यात्रा श्री श्री नजर निहाल आश्रम ओंकारेश्वर में 27 जनवरी को संपन्न हुई।

पदयात्रा श्री श्री 1008 अवधूत पूज्य नर्मदानंद बापजी महाराज के सानिध्य में संपन्न हुई, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र, धर्म और मानवता के कल्याण हेतु समर्पित किया है। पूज्य बापजी द्वारा पूर्व में वर्ष 2001 एवं 2014 में नंगे पैर नर्मदा परिक्रमा पूर्ण की जा चुकी है, वहीं 2011 से 2025 के मध्य 7 बार वाहन द्वारा नर्मदा परिक्रमा की गई। इसके अतिरिक्त आपने लगभग 12,000 किलोमीटर की राष्ट्रधर्म विजय पदयात्रा कर द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करते हुए राष्ट्र जागरण का संदेश दिया। पूज्य बापजी द्वारा वर्ष 2006 से 2025 के बीच संपूर्ण भारतवर्ष में महारुद्र यज्ञ, अतिरुद्र यज्ञ, शतचंडी, सहस्त्रचंडी, महाविष्णु यज्ञ एवं लक्ष्मी-नारायण यज्ञा सहित अनेक आध्यात्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया, जिनका उद्देश्य जीव, समाज और राष्ट्र का कल्याण रहा है।

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड द्वारा हुए सम्मानित - गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस के प्रतिनिधि द्वारा इस अवसर पर अतिथियों के बीच पूज्य नर्मदानंद बापजी महाराज महाराज को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा नर्मदा प्रदक्षिणा का उद्देश्य केवल धार्मिक आस्था तक सीमित न होकर राष्ट्र जागरण, युवाओं को भारतीय मूल संस्कृति से जोड़ना, माँ नर्मदा का संरक्षण, स्वच्छत्ता एवं पर्यावरण संरक्षण तथा गौ माता के संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुँचाना है। पूज्य बापजी का संदेश है कि जीवन में कम से कम एक बार माँ नर्मदा की परिक्रमा अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि यह ईश्वर की विशेष कृपा से ही संभव होती है। सम्मापन अवसर पर महामंडलेश्वर उत्मम स्वामीजी महाराज, मध्यप्रदेश के नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय एवं मंत्री इंदर सिंह परमार तथा पूर्व मंत्री कमल पटेल, सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल एवं मांधाता विधायक नारायण पटेल, बड़वाह विधायक सचिन बिरला प्रदीप पांडेय अनेक संत एवं जनप्रतिनिधि शामिल हुए। जानकारी पं संजय शर्मा ने दी।

एबीवीपी के आंदोलन का असर, विद्यालय तक जाने वाली सड़क निर्माण को मिली स्वीकृति

बैतूल/मुलताई। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के निरंतर प्रयासों एवं आंदोलन के परिणामस्वरूप विद्यालय तक पहुँचने वाली लगभग 200 मीटर जर्जर सडक़ के निर्माण को स्वीकृति प्रदान की गई है। वर्षों से खराब स्थिति में पड़ी इस सडक़ के कारण विद्यार्थियों एवं आम नागरिकों को आवागमन में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। अब शीघ्र ही सडक़ निर्माण कार्य प्रारंभ किया जाएगा।

परिषद द्वारा ज्ञापन एवं प्रदर्शन के माध्यम से लगातार जनप्रतिनिधियों का ध्यान इस गंभीर समस्या की ओर आकर्षित किया गया। इसके पश्चात विधायक प्रतिनिधि श्री रविंद्र (रवि) देशमुख द्वारा विद्यालय एवं क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं से क्षेत्रीय विधायक चंद्रशेखर देशमुख को अवगत कराया गया। जिस पर विधायक ने त्वरित संज्ञान लेते हुए सडक़ निर्माण कार्य को स्वीकृति प्रदान की। क्षेत्रीय विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की मांग को स्वीकार करते हुए यह भी आश्वासन दिया कि वे स्वयं प्रभात पट्टन पहुँचकर स्थल का निरीक्षण करेंगे तथा कार्य को शीघ्र प्रारंभ कराया जाएगा। इस अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बैतूल जिला संयोजक दीपेंद्र पवार, नगर मंत्री टोनी शिवहरे, नगर सह मंत्री शुभम खवादे, नगर सह मंत्री रवि तायवाड़े, सानिध्य पाल, राजा कसारे, आयुष पाल, संकेत मालवीय, गौरव ओंकार, यस पोटफोड़े सहित परिषद के अन्य कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

जिलास्तरीय वाहन रैली 30 जनवरी को

बैतूल। मप्र. शासन द्वारा किसान कल्याण वर्ष-2026 के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया गया है। इसी उपलक्ष्य में जिला स्तर पर प्रचार-प्रसार हेतु मोटरसाइकिल, फोर व्हीलर, वाहन रैली 30 जनवरी को शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम बैतूल से प्रातः 10 बजे आयोजित की गई है। किसान कल्याण तथा कृषि विकास उप संचालक ने बताया कि रैली का उद्देश्य जिला स्तर पर किसानों के बीच जागरूकता का वातावरण निर्मित करना है। वाहन रैली शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम बैतूल से प्रारंभ होकर कोठीबाजार मुख्य बस स्टैंड, मुख्य थाना चौक रोड कोठीबाजार, कॉलेज चौक, रेल्वे स्टेशन रोड, बडोरा चौक, कृषि उपज मंडी बडोरा, गेंदा चौक, डॉ. भीमराव अंबेडकर चौक होते हुए कार्यालय उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग बैतूल में रैली का समापन होगा। उन्होंने वाहन रैली में प्रगतिशील कृषक, युवा नवाचारी किसान, कृषि एवं सहयोगी विभाग के अधिकारी, कर्मचारियों से शामिल होने की अपील की है।

अंतर्राष्ट्रीय खेल ब्लैक बेल्ट 'शो दान' कनाडा की डिग्री को प्राप्त करने वाले प्रदेश के पहले खिलाड़ी घनश्याम पटेल को केंद्रीय राज्य मंत्री ने सम्मानित किया

धार। धार साई के कराटे खेल के पूर्व खिलाड़ी घनश्याम पटेल जीनू जिन्होंने भारतीय खेल प्राधिकरण धार मध्य प्रदेश के एसटीटी केंद्र के पूर्व प्रशिक्षक व डेफ ओलंपिक प्रशिक्षक प्रदीप कुमार के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण लेकर कराटे खेल के ब्लैक बेल्ट 'शो दान' की डिग्री मेरिट श्रेणी में हासिल की है यह उपलब्धि मध्य क्षेत्र (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़) से प्रथम ओर पूरे भारत में सात खिलाड़ियों को यह उपाधि प्राप्त हुई है।

घनश्याम पटेल की इस बड़ी उपलब्धि पर सावित्री ठाकुर (सांसद एवं केंद्रीय राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास, भारत सरकार) द्वारा सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री से मुलाकात की बात कहते हुए कहा धार और मध्यप्रदेश सहित भारतीयों के लिए यह गर्व का विषय है।

घनश्याम पटेल ने कोरोना काल से लेकर अब तक के कड़ी मेहनत के सफर में ब्लैक बेल्ट का यह मुकाम हासिल

किया है। यह ब्लैक बेल्ट की डिग्री कनाडा के द्वारा ग्रैंड मास्टर वरुण जेटली जी, 8 डान ब्लैक बेल्ट गोजू सीन रयू व स्कूल आफ ट्रेडिशनल मार्शल आर्ट व अंतरराष्टीय कराटे संघ द्वारा मान्यता प्राप्त संगठन में प्रशिक्षण हासिल किया। घनश्याम लाठी खेल में भी अंतरराष्ट्रीय स्तरीय खिलाड़ी हैं वह विशेष तौर पर समुराई नानचाक डबल स्टिकवेपन और निंजा की तकनीक पर कार्य प्रशिक्षण कनाडा के मार्गदर्शन में ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि, मैं धार, मध्य प्रदेश और देश का नाम मार्शल आर्ट की दुनिया में विश्व पटल पर लाना चाहता हूं। क्षेत्र के बच्चों को कराटे के माध्यम से आत्मरक्षा के योग्य बनाने हेतु प्रयासरत हूं। पुलिस आर्मी व अन्य फोर्सेज के लिए भी अवसर मिलने पर भारत देश की सेवा चाहते है। सफलता का श्रेय वह अपने माता-पिता अपने गुरुजनों को समर्पित करते हैं। इस अवसर पर विवेक गौड़ एवं साथीगण उपस्थित रहे।

ग्राम पंचायत छावल में मनाया गया आनंद उत्सव

आमला। हर साल की तरह इस साल भी राज्य सरकार द्वारा हर पंचायत स्तर पर आनंद उत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गांव के बुजुर्ग लोगो के साथ पंचायत के अंतर्गत आने वाले गांव के लोगों के साथ खेल गतिविधियां आयोजित की गई । जिसमे रस्सी

खींच, चमच दौड़, कबड्डी आयोजित की गई। ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले स्कूल एवं प्राइवेट स्कूल के बच्चो ने रागरंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। ग्राम पंचायत छावल के सरपंच राजू कापसे, सचिव सिकरवार, प्रकाश विश्वकर्मा हाई सेकेडरी स्कूल छावल के मुख्य अतिथि प्रभारी प्राचार्य किरण खोबरे, प्रदीप कुमार चौकीकर, दिनेश मोरले, दिलीप उईके, राजेंद्र गुजरे, अखलेश प्रजापति, मनीष हुरमाड़े, दिलीप उईके, राजेंद्र गुजरे उपस्थित थे। प्रवीण उईके द्वारा मंच संचालन किया गया। सरपंच एवं प्रभारी प्राचार्य द्वारा विजेताओं को ईनाम वितरित किए गए। इस अवसर पर भारी संख्या में गांव के गणमान्य नागरिक एवं ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले गांव के नागरिक उपस्थित हुए।

पशुपालन एवं पशु कल्याण अभियान के तहत निबंध, क्विज, चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

बैतूल। जिले में पशुपालन एवं पशु कल्याण को लेकर विद्यार्थियों को जागरूक करने के उद्देश्य से पशुपालन विभाग द्वारा 28 जनवरी को पीएमश्री स्कूल पधार एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खेलड़ी का भ्रमण किया गया। इस दौरान स्कूल परिसर में छात्र-छात्राओं के लिए पशुपालन एवं पशु कल्याण विषय पर निबंध प्रतियोगिता, पेंटिंग गतिविधि एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को पशुपालन से जुड़े विभिन्न विषयों पर व्यवहारिक जानकारी दी गई। पशुपालन विभाग के अधिकारियों ने विभाग द्वारा संचालित प्रमुख योजनाओं डॉ. भीमराव अंबेडकर योजना, विद्यासागर योजना, बकरी इकाई योजना, पशु केसीसी योजना—के साथ-साथ पशु टीकाकरण, पशु उपचार, कृत्रिम गर्भाधान एवं सेक्स सॉर्टेड सीमन की विस्तृत जानकारी दी। इसके अलावा चलित पशु चिकित्सा सेवा के टोल फ्री नंबर 1962 की जानकारी देते हुए बताया कि इस नंबर पर कॉल कर पशुपालक अपने पशुओं के इलाज के लिए घर पहुंच सेवा का लाभ ले सकते हैं। कार्यक्रम में दोनों विद्यालयों के लगभग 200 विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नवोदय विद्यालय प्रभात पट्टन में एनडीआरएफ ने सिखाए आपदा से बचाव के गुर

भूकंप, सीपीआर, अग्निशमन से लेकर रस्सी बचाव का दिया प्रशिक्षण

बैतूल। जवाहर नवोदय विद्यालय प्रभात पट्टन में राष्ट्रीय आपदा मोचन बल एनडीआरएफ द्वारा विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण 11वीं वाहिनी एनडीआरएफ वाराणसी की टीम द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित बारह दिवसीय फीमेक्स कार्यक्रम के अंतर्गत दिया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि एनडीआरएफ की टीम बैतूल जिले की विभिन्न तहसीलों का भ्रमण कर आपदा से निपटने की तैयारियों का निरीक्षण कर रही है तथा संबंधित इकाइयों के साथ समन्वय बैठकें कर रही है, ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार की आपदा से मिल-जुलकर प्रभावी ढंग से निपटा जा सके। इसके साथ ही तहसीलों में स्थित स्कूल एवं कॉलेजों के विद्यार्थियों को जीवन रक्षा एवं आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है। आपदा जोखिम न्यूनीकरण अभियान के तहत 28 जनवरी को जवाहर नवोदय विद्यालय प्रभात पट्टन में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम 11 बटालियन एनडीआरएफ वाराणसी के उप महानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के दिशा-निर्देशन में एवं इंस्पेक्टर सत्यजीत सिंह के नेतृत्व में संपन्न हुआ। प्रशिक्षण के दौरान एनडीआरएफ की अनुभवी टीम

ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को भूकंप के दौरान बचाव के तरीके, सीपीआर, गले में फंसी बाहरी वस्तु निकालने की विधि, शारीरिक चोटों का अस्पताल-पूर्व उपचार, तात्कालिक स्ट्रेचर बनाना, लिफ्टिंग एवं मूविंग तकनीक, अग्निशमन एवं आग से बचाव, रस्सी बचाव तकनीक, अग्निशामक यंत्र का उपयोग, इम्प्रोवाइज्ड फ्लोटिंग डिवाइस राफ्ट निर्माण तथा सडक़ सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यालय के प्राचार्य सीएस पटेल ने एनडीआरएफ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह जागरूकता कार्यक्रम अत्यंत प्रशंसनीय एवं शिक्षाप्रद है। इससे विद्यार्थी और शिक्षक आपदा प्रबंधन में अधिक सक्षम होंगे तथा आपदा के समय अपने साथ-साथ अन्य लोगों के जीवन की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रम से विद्यार्थियों में जाग रही स्वस्थ जीवनशैली की अलख

पहला सुख निरोगी काया के सिद्धांत को जन-जन तक पहुंचा रहा विभाग

बैतूल। जिले में आयुष विभाग, मध्य प्रदेश द्वारा संचालित आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से आम नागरिकों और स्कूली छात्र-छात्राओं को आयुष चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी दी जा रही है और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य पहला सुख निरोगी काया के सिद्धांत को जन-जन तक पहुंचाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जिले के विभिन्न विकासखंडों में कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. मनोज वर्मा एवं सहायक नोडल अधिकारी डॉ. रैना कासदे के मार्गदर्शन में जन-जागरूकता कार्यक्रमों और स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन

किया जा रहा है। आयुष चिकित्सकों द्वारा स्कूलों में कार्यशालाएं आयोजित कर विद्यार्थियों को आयुर्वेद आधारित दिनचर्या, ऋतुचर्या, योग, प्राणायाम, स्वच्छता और संतुलित आहार के महत्व की जानकारी दी जा रही है। कार्यक्रम के तहत बच्चों और युवाओं को बदलते पर्यावरण, बढ़ती स्क्रीन टाइम और आधुनिक जीवनशैली के कारण होने वाली बीमारियों से बचाव के उपाय बताए जा रहे हैं, साथ ही आयुष उपचार के माध्यम से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। वृद्धजनों के लिए वयोमित्र, बेहतर संतति के लिए सुप्रजा तथा अस्थि व पेशियों से जुड़ी समस्याओं से बचाव के लिए भी जागरूक किया जा रहा है।

जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर ने बताया कि दिसंबर 2025 से जनवरी 2026 तक चल रहे इस कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक जिले में 1000 से अधिक लोग लाभान्वित हो चुके हैं। आयुष विभाग के अधिकारी और कर्मचारी इस अभियान को सफल बनाने के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। विभाग ने आमजन से अपील की है कि वे आयुष विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रमों का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

पिता-पुत्र ने मिलकर की थी युवक की हत्या

पुलिस ने किया हत्या का खुलासा, आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। आठनेर पुलिस ने सावंगी नदी पुलिया के नीचे मिले एक युवक की हत्या का खुलासा करते हुए पिता-पुत्र को गिरफ्तार किया है। मृतक की पहचान राजेश आज़ाद के रूप में हुई थी, जिसका शव 20 जनवरी को बरामद किया गया था। मृतक राजेश आज़ाद के परिजन कृष्णा आज़ाद की सूचना पर आठनेर थाना में मर्ग दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। घटनास्थल से जुटाए गए साक्ष्यों और तकनीकी विश्लेषण के आधार पर पुलिस ने इसे हत्या का मामला पाया। पुलिस जांच में सामने आया कि 19-20 जनवरी की रात करीब डेढ़ बजे राजेश का विवाद नारायण खंडाइट और उसके बेटे

ओम खंडाइट से हुआ था। विवाद के दौरान दोनों आरोपियों ने राजेश के साथ मारपीट की। घायल राजेश को वे मोटरसाइकिल पर बैठाकर मांडवी जोड़ पुलिया तक ले गए। वहां से उन्होंने राजेश को पुलिया के नीचे फेंक दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने संदेह के आधार पर नारायण खंडाइट (55) और ओम खंडाइट (27), दोनों निवासी मांडवी, को हिरासत में लिया। पूछताछ में उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उनकी निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त लकड़ी का डंडा और एक बिना नंबर की एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल जब्त की गई है। दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया है। पुलिस ने इस मामले में धारा 103(1), 3(5) बीएनएस के तहत प्रकरण दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

हर दौर में प्रासंगिक रहेंगे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

पुण्यतिथि-शहीद दिवस पर आदरांजलि

भूपेश गुप्ता
(संयुक्त आयुक्त, ग्रामीण विकास विभाग)

30 जनवरी भारतीय इतिहास की वह अमर तारीख है, जो आते ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की याद दिला देती है। 30 जनवरी 1948 को दिल्ली में प्रार्थना सभा के मार्ग पर, नाथूराम गोडसे की गोली ने गांधी के शरीर को तो समाप्त कर दिया, पर उनके विचारों को नहीं। भारत इस दिन को शहीद दिवस के रूप में मनाते हुए उस महामानव को श्रद्धांजलि अर्पित करता है जिसने सत्य, अहिंसा और नैतिक साहस को राजनीति की सबसे बड़ी शक्ति बनाया।

2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर में जन्मे मोहनदास करमचंद गांधी ने अपने जीवन के छह दशक संघर्षों में तपकर 'महात्मा' का स्वरूप पाया। उनका सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने आज़ादी की लड़ाई को केवल सत्ता परिवर्तन का आंदोलन नहीं रहने दिया, बल्कि उसे जन-जन का नैतिक आंदोलन बना दिया। जिस ब्रिटिश साम्राज्य के बारे में कहा जाता था कि उसके साम्राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता, उसे गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह के बल पर झुकने को मजबूर कर दिया।

आज जब विश्व तीसरे विश्वयुद्ध की आशंकाओं से घिरा दिखाई देता है, तब गांधी और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध की लंबी त्रासदी हो या इज़राइल-फिलिस्तीन के बीच गाज़ा में मानवता को झकझोरता रक्तपात हो, इन सबने दुनिया के विवेक को चुनौती दी है। शक्तिशाली राष्ट्र हथियारों, व्यापार-युद्ध और वैश्विक राजनीतिक दबावों के माध्यम से छोटे देशों पर अपनी शर्तें थोपने की कोशिश करते दिखाई देते हैं। परिणामस्वरूप करोड़ों लोग विस्थापित हैं, जीवन असुरक्षित है और मानवीय संवेदनाएँ लगातार कमजोर पड़ रही हैं।

इतिहास बताता है कि पिछली सदी ने दो महायुद्धों की विनाशलीला देखी। हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु हमले आज भी सभ्यता पर लगा वह दाग हैं जो मानवता को भयभीत कर देते हैं। विज्ञान के विकास के साथ विनाश की क्षमता भी बढ़ी और यही मानव इतिहास का सबसे बड़ा विरोधाभास है। ऐसे दौर में गांधी का संदेश एक चेतावनी भी है और एक समाधान भी। उन्होंने कहा था - 'जीत वह नहीं जिसमें शत्रु पर विजय हो–जीत वह है जिसमें हिंसा पर विजय हो।'

गांधी का सत्याग्रह केवल सिद्धांत नहीं था, वह एक व्यावहारिक रणनीति भी थी। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने नस्लभेद और अपमान के विरुद्ध भारतीयों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। 1903 में 'इंडियन ओपिनियन' जैसे समाचार पत्र के माध्यम से उन्होंने अंग्रेज सत्ता को अभिव्यक्ति की खुली चुनौती दी। बैरिस्टर के रूप में वहां पहुँचे गांधी ने 1894 से 1914 तक सत्याग्रह को जन-आंदोलन का रूप दिया और दुनिया को दिखा दिया कि अन्याय के विरुद्ध सबसे बड़ी शक्ति नैतिकता है।

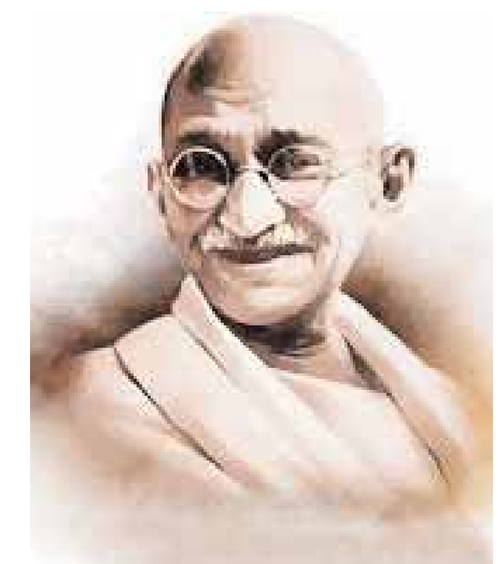

गोपालकृष्ण गोखले जी के आग्रह पर गांधी 1915 में भारत लौटे। उन्होंने तीन वर्षों तक देश का भ्रमण कर भारतीय समाज की नब्ज़ को पहचाना। 1917 में चंपारण में नील की खेती करने वाले किसानों के पक्ष में उनका सत्याग्रह ब्रिटिश शासन के लिए पहली बड़ी चुनौती बना। इसके बाद खेड़ा किसान आंदोलन और अहमदाबाद मिल मज़दूर आंदोलन के माध्यम से गांधी ने प्रमाणित कर दिया कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक वर्ग का विषय नहीं बल्कि वह किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और गरीब की साझा आकांक्षा है।

गांधी ने सादगी को शक्ति बना दिया। उन्होंने सूट-बूट त्यागकर धोती धारण की, आश्रम जीवन अपनाया और स्वयं को आमजनता के समान बनाया। उन्होंने चरखा और खादी को केवल वस्त्र नहीं रहने दिया, बल्कि उसे स्वावलंबन और आत्मसम्मान का प्रतीक बना दिया। छुआछूत के विरुद्ध उन्होंने व्यापक जनजागरण किया और 'हरिजन' जैसे शब्दों के माध्यम से समाज को आत्ममंथन के लिए बाध्य किया।

उनका अहिंसा-सिद्धांत कितना दृढ़ था, इसका उदाहरण चौरी-चौरा है। जब आंदोलन के दौरान हिंसा हुई तो उन्होंने एक बड़े जनांदोलन को वापस लेने का कठोर निर्णय किया। क्योंकि उनके लिए साधन और लक्ष्य दोनों पवित्र थे। 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में 'करो या मरो' का आह्वान करके उन्होंने ब्रिटिश शासन की अंतिम नींव हिला दी। जेल, यातनाएँ और दबाव, इनमें से कुछ भी उन्हें उनके मूल सिद्धांतों से नहीं डिगा सका।

दुर्भाग्य यह रहा कि स्वतंत्रता के बाद देश साम्प्रदायिक विष से अछूता नहीं रह पाया। 1905 के बंगाल विभाजन से बोया गया विभाजन का बीज अंततः 1947 में देश के बंटवारे के रूप में सामने आया। गांधी अंतिम समय तक हिंदू-मुस्लिम एकता, सर्वधर्म समभाव और शांति के लिए संघर्ष करते रहे। लेकिन वही साम्प्रदायिकता, जो उनके जीवनभर विरोध में थी, अंततः 30 जनवरी 1948 को उनके प्राण ले गई।

गांधी शरीर से चले गए, पर वे विचार के रूप में अमर हो गए। उनकी प्रेरणा मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला जैसे विश्व नेताओं में स्पष्ट दिखाई देती है। दुनिया के अनेक देशों में गांधी की प्रतिमाएँ स्थापित हैं, उनके नाम पर संस्थान हैं, विश्वविद्यालयों में अध्ययन और शोध होते हैं। अल्बर्ट आइंस्टीन का कथन आज भी उतना ही सार्थक है कि आने वाली पीढ़ियाँ शायद विश्वास नहीं करेंगी कि धरती पर हाड़-मांस का ऐसा मनुष्य भी आया था।

महात्मा गांधी का अहिंसा-सिद्धांत केवल भावुक आदर्श नहीं, बल्कि कर्तव्य-आधारित जीवन-दर्शन था। यही दृष्टि हमें श्रीमद्भगवद्गीता में भी मिलती है जहाँ कर्म से पलायन नहीं, बल्कि समत्व के साथ कर्म करने का संदेश है। गीता कहती है– 'योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय'। अर्थात आसक्ति छोड़कर, धैर्य और संतुलन के साथ अपने कर्तव्य का पालन करो। गांधी ने इसी भावना को अपने जीवन में उतारकर यह सिद्ध किया कि संघर्ष केवल क्रोध नहीं, अनुशासन भी है; और सत्याग्रह केवल विरोध नहीं, आत्मबल की साधना है।

महात्मा गांधी का सबसे बड़ा संदेश सरल है– 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। 'उनकी पुण्यतिथि पर हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सत्य, अहिंसा, करुणा और सामाजिक समरसता को केवल स्मरण न करें, बल्कि उसे व्यवहार और सार्वजनिक जीवन का अनुशासन बनाएं। क्योंकि गांधी केवल इतिहास नहीं बल्कि वे भविष्य की सबसे अनिवार्य जरूरत हैं।

सरोजिनी नायडू कॉलेज में दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

भोपाल। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 29-30 जनवरी 2026 को परिवार विवाह परामर्श प्रकोष्ठ एवं समाजशास्त्र विभाग द्वारा किया गया। विषय भारतीय परिवार व्यवस्थाः चुनौतियों एवं समाधान था। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. दीप्ति श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में एवं डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे व डॉ. भारती कुमारे सातनकर की अध्यक्षता में कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलित कर एवं सरस्वती पूजन के साथ किया गया। आरंभ में सभ्यता में परिवार व्यवस्था का कैसे विकास हुआ, पर अपनी विचार व्यक्त किये। उन्होने बताया कि भारतीय समाज एवं परिवार सदियों से संयुक्त परिवार में रहकर धार्मिक अनुष्ठानों, पर्व, तीज-त्यौहारों को एक साथ मनाया करते थे तथा बच्चों में सत्संग एवं प्रार्थना आदि के माध्यम से संस्कारित किया करते थे जबकि एकाकी परिवार में इन सब का अभाव दिखाई देता है जो कि भविष्य के लिये भारतीय परिवार व्यवस्था पर एक चुनौती हैं।

प्राचार्य डॉ. दीप्ति श्रीवास्तव ने स्वागत भाषण में एव जागरूकता हेतु सर्टिफिकेट डिप्लोमा कोर्स प्रारंभ करने की बात कही । कार्यक्रम की संयोजक डॉ. निशा जैन ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला ।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. सदानंद सप्रे जी (सेवानिवृत्त प्राध्यापक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल म.प्र) ने कहा कि भारतीय संस्कृति विशेष है जो कि सनातन से आज तक उतनी ही सशक्त और समृद्ध बनी हुई है जबकि अन्य राष्ट्रों की संस्कृति कभी विश्व में सर्वोपरि थी जबकि वर्तमान में लुप्त हो गई हैं।

विशिष्ट अतिथि कवीन्द्र कियावत (सेवानिवृत्त IAS) ने अपने बीज वक्तव्य में परिवार की परिभाषा बताते हुये मानव

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. दिवाकर शर्मा सेवानिवृत्त प्राध्यापक समाजशास्त्र हरिसिंह गौर वि.वि. सागर ने अपने उद्बोधन में विषय का समाजशास्त्रीय पक्ष विस्तार से प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्ष डॉ. भारती कुम्भारे सातनकर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ समाज में गीता के सिद्धांतों को आत्मसात करने पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीना श्रीवास्तव एवं अभार डॉ. मनीषा शर्मा ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति की सचिव डॉ. अर्चना चौहान एवं डॉ. रानू वर्मा तथा सह-सचिव डॉ. नूतन केवट व डॉ. कीर्ति वर्मा का विशेष योगदान रहा।

मप्र से यूपी और नेपाल तक, 300 परिवार की बेटियां बागेश्वर धाम में लेंगी सात फेरे

इनमें कोई गरीब तो कोई अनाथ

छतरपुर (नप्र)। बागेश्वर धाम में शिवरात्रि के अवसर पर पंडित धीरेंद्र शास्त्री 300 गरीब, अनाथ और जरूरतमंद बेटियों का विवाह कराएंगे। यह सप्तम कन्या विवाह महोत्सव नेपाल सहित देश के 10 राज्यों की बेटियों के लिए आयोजित किया जा रहा है। इस विवाह का सारा खर्च धाम की दान पेटी में आई राशि से उठाया जाएगा। बेटियों का चयन देश के 60 जिलों से किया गया है, जिनमें मध्य प्रदेश से 229 और उत्तर प्रदेश से 56 बेटियां शामिल हैं।

10 राज्यों से किया है चयन– इस खास विवाह महोत्सव में कुल 300 बेटियों को परिणय सूत्र में बांधा जाएगा। इन बेटियों का चयन देश के 10 राज्यों के 60 जिलों से किया गया है। मध्य प्रदेश से सबसे ज्यादा 229 बेटियां इस विवाह में शामिल हो रही हैं, जबकि उत्तर प्रदेश से 56 बेटियां शामिल होंगी। खास बात यह है कि नेपाल से भी एक बेटी इस विवाह के लिए बागेश्वर धाम आ रही है। यह आयोजन शिवरात्रि के पावन अवसर पर किया जा रहा है।

कई बेटियों का कोई नहीं– चयनित 300 बेटियों में 60 अनाथ हैं। 138 बेटियां ऐसी हैं जिनके पिता नहीं हैं, और 28 बेटियां ऐसी हैं जिनके माता नहीं हैं। इसके अलावा, 8 दिव्यांग बेटियां और 23 दिव्यांग माता-पिता की बेटियां भी इस विवाह में शामिल होंगी। 39 बेटियां बहुत ही गरीब परिवारों से हैं।

दान पेटी की राशि से होती हैं शादियां– बागेश्वर धाम की दान पेटी में जो भी राशि आती है, उसी से इन बेटियों के विवाह का सारा खर्च उठाया जाता है। पंडित धीरेंद्र शास्त्री का मानना है कि अगर देशभर के मठ-मंदिरों में ऐसी पहल हो तो गरीब बेटियों का घर बस सकेगा और कोई भी बेटी को बोझ नहीं समझेगा। बेटियों और वर पक्ष की ओर से 1 दिसंबर से 15 दिसंबर के बीच बागेश्वर धाम आकर सभी जरूरी दस्तावेजों के साथ फॉर्म जमा किए गए थे। इसी के आधार पर बेटियों का चयन किया गया है।

इन बेटियों के लगेगी मेहंदी– इस विवाह में शामिल होने वाली कुछ बेटियों के नाम रंजीता सेन, नीलू कुशवाहा, रानू रघुवंशी, सपना विश्वकर्मा, मांसी श्रीवास्तव, मासूम प्रजापति, ज्योति, शिवानी कुशवाहा, राधिका खेंगर, नीलम कोरोची, शशि, अंजो सेन, लक्ष्मी अनुरागी, पूजा बंसल, साधना आदिवासी, अनमोल रैकवार, धनवंती नगपुरे, आरती रैकवार, गायत्री अहिरवार, हिरिया बाई कोंदर, वर्षा अहिरवार, मीनू सेन, प्रिया देवी विश्वकर्मा, रक्षा देवी कचेरे, वंदना अहिरवार, पूजा यादव, पूजा विश्वकर्मा, माया अहिरवार, रानी नामदेव, लक्ष्मी सोनी, पदमनी रैकवार, देवकुमारी, कुमकुम पुष्पकार, कु. रानी कुशवाहा आदि हैं।

बैतूल में पहली बार 5 दिवसीय संगीतमय बुद्धगाथा

बौद्धाचार्य दीदी ने करुणा और पंचशील का दिया संदेश

बैतूल। बुद्धभूमि बैतूल के तत्वाधान में बैतूल जिले में 5 दिवसीय संगीतमय बुद्धगाथा का भव्य आयोजन पंचशील बुद्ध विहार सदर बैतूल में किया जा रहा है। बुद्धभूमि बैतूल एवं सामाजिक बंधुओं के सहयोग से यह आयोजन 28 जनवरी 2026 से 1 फरवरी 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। आयोजन के पहले दिन 28 जनवरी को धम्म वाहन रैली बुद्धभूमि सोनाघाटी से सुबह 9:30 बजे प्रारंभ होकर अम्बेडकर चौक होते हुए 10:30 बजे पंचशील बुद्ध विहार पहुंची। रैली में बड़ी संख्या में बौद्ध उपासक-उपासिकाएं शामिल हुए। इसके बाद संगीतमय बुद्धगाथा का शुभारंभ हुआ, जिसे सुनने श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। दूसरे दिन 29 जनवरी को बौद्धाचार्य दीदी कृष्णा राही बुद्धगाथा वाचिका मुरैना एवं बौद्धाचार्य दीपक दीवाना भोपाल द्वारा करुणा, मैत्री और पंचशील के मार्ग पर आधारित गाथा वाचन किया गया। गाथा में बौद्धाचार्य दीदी कृष्णा राही ने भगवान बुद्ध के जीवन और उपदेशों को संगीतमय रूप में प्रस्तुत करते हुए बताया कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका क्रोध और लोभ है, जबकि करुणा, मैत्री और सम्यक दृष्टि से ही जीवन में शांति संभव है। गाथा में अहिंसा, सत्य, करुणा और पंचशील के मार्ग पर चलकर दुखों से मुक्ति पाने का संदेश दिया गया। आयोजन समिति अध्यक्ष तुकाराम लोखंडे, बुद्ध भूमि के अध्यक्ष संदीप मानकर, सचिव रामदास पाटिल, उपाध्यक्ष दिनेश मानकर, सह-सचिव नरेश भूमरकर, कोषाध्यक्ष कौशीबाई मालवीय, बुद्ध भूमि के संरक्षक धनराव चंदेलकर, एनके मांडवे सहित सभी पदाधिकारियों एवं संरक्षकों ने जिले के समस्त बौद्ध उपासक-उपासिकाओं से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर पुण्य लाभ अर्जित करने की अपील की है।

जयस की बैठक में वन अधिकार यात्रा और सदस्यता अभियान पर बनी रणनीति

संगठन को गांव–गांव तक पहुंचाने का लिया संकल्प

बैतूल। जयस संगठन घोड़ाडोंगरी की ब्लॉक स्तरीय महत्वपूर्ण बैठक में वन अधिकार यात्रा निकाले जाने तथा जयस सदस्यता अभियान चलाने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। इस बैठक में ब्लॉक के सभी कार्यकर्ता, मंडल अध्यक्ष एवं ब्लॉक पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। बैठक को संबोधित करते हुए जयस संगठन के ब्लॉक अध्यक्ष दीपक अहाके ने संगठन को जमीनी स्तर

तक मजबूत करने की ठोस कार्ययोजना प्रस्तुत की और हर गांव तक जयस संगठन को पहुंचाने का आह्वान किया। वहीं ब्लॉक कार्यकारिणी अध्यक्ष पतिराम उइके ने कार्यकर्ताओं एवं युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने पर विशेष मार्गदर्शन दिया। संगठन ने एकजुट होकर मजबूती के साथ नए दौर में आगे बढने् का संदेश दिया। बैठक में जयस ब्लॉक अध्यक्ष घोड़ाडोंगरी दीपक अहाके, उपाध्यक्ष हरि, कार्यकारिणी अध्यक्ष पतिराम उइके, सारनी सेक्टर अध्यक्ष हमेश उइके, ब्लॉक संरक्षक कैलाश, ब्लॉक प्रचारक विकाश, शैलेंद्र, रामसिंग, विजय आहके, रुस्तम तुमडाम, राजेश, दिनेश, पिंकेश कुमरे सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जल जीवन मिशन ग्रामीण जीवन में ला रहा बड़ा बदलाव : विधायक श्रीमती उइके

जल जीवन मिशन के तहत ग्राम फूलबेरिया में नल जल योजना ग्राम को समर्पित

बैतूल। जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्राम स्तरीय जन भागीदारी कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायत बादलपुर के ग्राम फूलबेरिया में 29 जनवरी को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर जल जीवन मिशन के तहत स्थापित ग्राम की नल जल योजना को विधिवत रूप से ग्राम को समर्पित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उइके, विपलव समददार, केऊलाल यादव, जनपद सदस्य प्रदीप विश्वास, श्रीमती सैनवती कवडे उपस्थित थी। कार्यक्रम में ग्राम की महिलाओं द्वारा कलश यात्रा के माध्यम से विभिन्न घरेलू नल कनेक्शनों से जल एकत्रित कर मंच के मुख्य कलश में संग्रहित किया गया। स्थानीय लोक नृत्य एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पेयजल गुणवत्ता, पेयजल संग्रहण, नल जल योजना के संचालन एवं संधारण के लिए ग्रामीणों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उइके ने कहा कि जल जीवन मिशन ग्रामीण जीवन में बड़ा बदलाव ला रहा है और महिलाओं को पानी की समस्या से राहत मिली है। उन्होंने पूर्व में ग्राम में पेयजल की समस्या एवं वर्तमान में जल जीवन मिशन से ग्राम को शासन के द्वारा दी गई सुविधा को विधिवत बनाये रखने के लिए मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम में जल के अपव्यय को रोकने, जल संरक्षण, जल संरचनाओं की देखरेख का संकल्प भी लिया गया।

जल जीवन मिशन से आए बदलाव की दी जानकारी– ग्राम सरपंच श्रीमती प्रमिला ककोडिय़ा के द्वारा ग्राम की सामान्य जानकारी के साथ-साथ जल जीवन मिशन की उपलब्धियों एवं सहभागिता के विषय में बताया गया। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना राय एवं श्रीमती प्रभा सरदार सदस्य के द्वारा जल जीवन मिशन से आए बदलाव, ग्राम में पेयजल की सहज एवं सुलभ उपलब्धता के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि नल जल योजना आने से गांव में पानी भरने की चिंता से मुक्ति मिली है। साथ ही छात्रों एवं छात्राओं को पढ़ाई के लिए अतिरिक्त समय मिल जाता है, ग्रामीण मजदूर परिवारों को भी समय पर पानी मिलने से मजदूरी के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। ग्राम रोजगार सहायक श्री कृष्णा सिंह के द्वारा मेरी पंचायत ऐप का परिचय दिया गया।

निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता से दिया जल संरक्षण का संदेश– कार्यक्रम के दौरान जल संरक्षण के उद्देश्य से प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के छात्रों ने चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें निबंध प्रतियोगिता में कुमारी अक्षिता दास कक्षा 8 वी की छात्रा प्रथम रही, वहीं चित्रकला में कुमारी राशि सरकार प्रथम स्थान पर आई। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान की छात्राओं को प्रमाण एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में कार्यपालन यंत्री मनोज बघेल, सहायक यंत्री योगेश धुर्वे, उपयंत्री विवेक रामटेके, जिला सलाहकार भूपेन्द्र सिंह मेनवे, विकासखंड समन्वयक श्रीमती माधुरी सूर्यवंशी एवं श्रीमती सीमा मसतकर उपस्थित रही। कार्यक्रम में आईएसए संस्था के सदस्य एवं कर्मचारियों की सहभागिता उल्लेखनीय रही।

हृदय रोग से जूझ रहे 11 मासूमों को मिली नई जिंदगी की उम्मीद

श्री सत्य साईं हार्ट हॉस्पिटल अहमदाबाद में बच्चों का होगा नि:शुल्क इलाज

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन में गुरुवार को बैतूल जिला चिकित्सालय से राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत हृदय रोग से ग्रसित 11 बच्चों को उन्नत उपचार के लिए श्री सत्य साईं हार्ट हॉस्पिटल अहमदाबाद रवाना किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. हुरमाडे ने हरी झंडी दिखाकर एंबुलेंस को रवाना किया। इस अवसर पर सीएमएचओ डॉ.हुरमाडे ने बच्चों और उनके परिजनों से आत्मीय चर्चा की। उन्होंने इलाज की पूरी प्रक्रिया की जानकारी देते हुए परिजनों को भरोसा दिलाया कि बच्चों का उपचार अनुभवी डॉक्टरों द्वारा किया जाएगा। साथ ही सभी बच्चों के जल्द स्वस्थ होकर बैतूल लौटने की कामना की। सीएमएचओ डॉ. हुरमाडे ने बताया कि 14 जनवरी को भोपाल स्थित जेपी अस्पताल में आरबीएसके के तहत विशेष हृदय रोग जांच शिविर आयोजित किया गया था। इस शिविर में बैतूल जिले के विभिन्न विकासखंडों से 75 बच्चों की जांच कराई गई, जिनमें चिन्हित किए गए बच्चों में से 11 बच्चों को गुरुवार को जिला चिकित्सालय बैतूल के डीआईसी से एंबुलेंस एवं आरबीएसके द्वारा रानी कमलापति स्टेशन भोपाल रवाना किया गया। यहां से सभी बच्चे अपने परिजनों के साथ ट्रेन के माध्यम से अहमदाबाद पहुंचेंगे, जहां श्री सत्य साईं हार्ट हॉस्पिटल में उनका नि:शुल्क उपचार किया जाएगा। इस दौरान चिकित्सा अधिकारी डॉ.रत्नेश खाड़े एवं आरबीएसके मैनेजर योगेंद्र कुमार दवंडे बच्चों के साथ मौजूद रहेंगे।

अटल सभागृह में 1 फरवरी को होगी वंदे मातरम् एकल गायन प्रतियोगिता

बैतूल। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्र चेतना का संचार करने वाले राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् की रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में माधव साख सहकारी संस्था, बैतूल द्वारा आयोजित सम्पूर्ण राष्ट्रगीत वंदे मातरम् एकल गायन प्रतियोगिता का व्याख्यान एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम रविवार 01 फरवरी को दोपहर 2 बजे से आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन अटल सभागृह, जे.एच. कॉलेज, बैतूल में होगा। माधव साख सहकारी संस्था, बैतूल के अध्यक्ष रमेश बोरखड़े ने बताया कि वंदे मातरम् के उद्घोष मात्र से जन-जन में राष्ट्रभक्ति और चेतना जागृत होती है। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए संस्था द्वारा जनवरी 2026 में विद्यार्थियों के लिए एकल गायन प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इसके साथ ही संस्था द्वारा गत माह विद्यार्थियों के माध्यम से 7000 परिवारों तक प्लास्टिक निषेध एवं विकल्प अभियान भी चलाया गया, जिसमें चयनित पर्यावरण मित्र विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक बैतूल हेमंत खंडेलवाल करेंगे, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में संस्था के समस्त पदाधिकारी संचालकगण प्रबंधक एवं समस्त स्टाफ मौजूद रहेंगे। संस्था की ओर से सभी नागरिकों, विद्यार्थियों एवं गणमान्यजनों को कार्यक्रम में उपस्थित होने का सादर आमंत्रण दिया गया है।

एमपी में 14 आईपीएस अफसरों के तबादले

भोपाल के नए पुलिस कमिश्नर होंगे संजय

हरिनारायण चारी एससीआरबी गए, उमेश जोगा नए परिवहन आयुक्त

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के पुलिस महकमे में बड़ी सर्जरी हुई है। जनवरी के अंत में सरकार ने 14 आईपीएस अफसरों का तबादला किया है। भोपाल पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्रा का भी ट्रांसफर हुआ

है। अब 2004 बैच के आईपीएस अधिकारी संजय कुमार को भोपाल का नया पुलिस कमिश्नर बनाया गया है।

एससीआरबी के बने आईजी

भोपाल पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्र को एससीआरबी का आईजी बनाया गया है। वहीं, वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी संजय कुमार को भोपाल का नया पुलिस आयुक्त नियुक्त किया गया है। गृह विभाग की तरफ से तबादले की अधिसूचना जारी हो गई है। अब तमाम अधिकारी नए पदस्थापना वाली जगह पर जाकर अपना कार्यभार संभालेंगे।

इन अधिकारियों का हुआ है तबादला

इस तबादला सूची में कई अन्य वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों के भी पद बदले गए हैं। 1992 बैच के पंकज कुमार अब तक विशेष पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय भोपाल थे, उन्हें विशेष पुलिस महानिदेशक, सीआईडी पुलिस मुख्यालय भोपाल और विशेष पुलिस महानिदेशक, सतर्कता पुलिस मुख्यालय भोपाल (अतिरिक्त प्रभार) बनाया गया है। 1994 बैच के अनंत कुमार सिंह केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से कार्यमुक्त हुए थे, उन्हें विशेष पुलिस महानिदेशक / प्रबंध संचालक म.प्र. पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन, भोपाल नियुक्त किया गया है।

इसके साथ ही 1995 बैच के के.पी. वेंकटेश्वर राव अब तक अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, नारकोटिक्स पुलिस मुख्यालय भोपाल थे, उन्हें अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, तकनीकी सेवाएं, पुलिस मुख्यालय भोपाल एवं अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, एसटीएफ / नक्सल ऑपरेशन (अतिरिक्त प्रभार) बनाया गया है। 1997 बैच के उमेश जोगा पुलिस महानिदेशक, उज्जैन जोन थे, उन्हें अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक / परिवहन आयुक्त, म.प्र., ग्वालियर (परिवहन विभाग को सेवाएं सौंपते हुए) नियुक्त किया गया है। वहीं, 1997 बैच के डी. श्रीनिवास वर्मा (आईपीएस 1997) अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय भोपाल थे, उन्हें अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, नारकोटिक्स, पुलिस मुख्यालय भोपाल एवं अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, एसटीएफ, पुलिस मुख्यालय भोपाल (अतिरिक्त प्रभार) बनाया गया है। 1998 बैच के विवेक शर्मा जो पुलिस महानिदेशक / परिवहन आयुक्त, म.प्र., ग्वालियर थे, उन्हें अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, पीटीआरआई पुलिस मुख्यालय भोपाल (परिवहन विभाग से सेवाएं वापस लेते हुए) नियुक्त किया गया है। 1998 बैच के अनुराग यादव जो पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय भोपाल थे, उन्हें संचालक, खेल एवं युवक कल्याण, म.प्र. बनाया गया है। 1999 बैच के राकेश गुप्ता जो संचालक, खेल एवं युवक कल्याण, म.प्र. थे, उन्हें अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, उज्जैन जोन, उज्जैन नियुक्त किया गया है।

आध्यात्मिक गुरू प्रमोद कुमार शर्मा डी. लिट से सम्मानित

मुंबई। डॉ. अजिंक्य डी. वाय. पाटिल विश्वविद्यालय के 10वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर उज्जैन के प्रख्यात आध्यात्मिक मार्गदर्शक गुरुजी प्रमोद कुमार शर्मा को प्रतिष्ठित डॉक्टरेट ऑफ लिटरेचर (डी.लिट.) (ऑनोरिस कॉज़ा) से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उनकी आध्यात्मिक साधना, मार्गदर्शन और निःस्वार्थ सेवाओं के लिए प्रदान किया गया, जो वे अपनी दृष्टि-शक्ति और दिव्य अंतर्दृष्टि के माध्यम से निरंतर देते आ रहे हैं। उनके मार्गदर्शन से अनेक वैज्ञानिकों, चिकित्सा विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं को अपने-अपने क्षेत्रों में श्रेष्ठ मार्ग चुनने और बेहतर परिणाम प्राप्त करने में सहायता मिली है। वे जरूरतमंद और वंचित वर्गों की समय पर आर्थिक व अन्य प्रकार की सहायता के लिए भी व्यापक रूप से जाने जाते हैं।

दीक्षांत समारोह में अन्य सम्मानित व्यक्तित्वों में शामिल थेः श्रीमती पंकजा गोपीनाथ मुंडे, प्रसिद्ध जननेता, भारत सरकार की पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं महाराष्ट्र की पूर्व उपमुख्यमंत्री, रोहित शर्मा, विश्व कप विजेता भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान, मनोज पोचाट, गोल्डियम इंटरनेशनल लिमिटेड के एग्जीक्यूटिव चेयरमैन, सुधेश अग्रवाल, गुरुग्राम में 5 अरब रुपये के निवेश से विकसित हो रहे सनातन धर्म सिटी के संस्थापक, डॉ. निशिकांत ओझा, भारत सरकार के एकीकृत रक्षा स्टाफ के चीफ एडवाइज़र-

स्ट्रैटेजिक अफेयर्स एवं स्टडी ग्रुप के चेयरमैन, रशीस भंडारी, हीरा निर्यात के प्रतिष्ठित व्यवसायी और न अग्रणी उद्यमी शामिल थे।

समारोह के मुख्य अतिथि गुयाना सहकारी गणराज्य के उच्चायुक्त धीरजकुमार सीरज थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ. अजींक्य डी. वाय. पाटिल ने की तथा मंच पर श्रीमती पूजा ए. पाटिल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभी सम्मानित अतिथियों ने चांसलर और अजिंक्य डी. वाय. पाटिल विश्वविद्यालय की टीम को ऐसी संस्था स्थापित करने के लिए धन्यवाद दिया, जिसका उद्देश्य छात्रों को प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया का सामना करने योग्य बनाना है। उन्होंने विद्यार्थियों को नवोन्मेषी और परिश्रमी बनने के साथ-साथ मानवता की सेवा के लिए भी सदैव तत्पर रहने की प्रेरणा दी।

मुख्य अतिथि सीरज ने अपने देश गुयाना की विशेषताओं पर प्रकाश डाला और भारतीयों को निवेश एवं पर्यटन दोनों उद्देश्यों से वहां आने का आमंत्रण दिया।

चांसलर डॉ. अजिंक्य डी. वाय. पाटिल ने विश्वविद्यालय की उस दूरदृष्टि को पुनः रेखांकित किया, जिसके अंतर्गत छात्रों को यह समझाया जाता है कि डिग्री प्राप्त करने के साथ-साथ उन्हें देश को एक वैश्विक शक्ति बनाने में भी योगदान देना है।

कुलपति डॉ. राकेश कुमार जैन ने कहा कि नवाचार विश्वविद्यालय की पहचान का अभिन्न हिस्सा है और यहां छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने तथा नए विचार सृजित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

इस भव्य दीक्षांत समारोह का संचालन प्रसिद्ध अभिनेत्री सुश्री विद्या मालवड़े, जो फिल्म 'चक दे इंडिया' में अपनी भूमिका के लिए जानी जाती हैं, द्वारा किया गया।

एमपी पुलिस ने राजस्थान में घुसकर ड्रग फैक्ट्री का किया खुलासा, 5 करोड़ का माल बरामद

आगर मालवा (नप्र)। जिले की पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करी के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई करते हुए राजस्थान में एमडी ड्रग्स फैक्ट्री का खुलासा किया है। साथ ही करीब पांच करोड़ का माल जब्त कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। एनडीपीएस एक्ट के तहत की गई कार्रवाई में मादक पदार्थ, केमिकल, हथियार और उपकरण जब्त किए गए हैं।

330 ग्राम एमडी ड्रग्स जब्त– आगर एसपी विनोद सिंह ने बताया कि 20 जनवरी को कोतवाली पुलिस ने मुखबिर सूचना पर आगर-सुसनेर रोड आमला क्षेत्र से फैजान पिता अब्दुल मन्नान निवासी नुरानी नगर सुसनेर को गिरफ्तार किया। आरोपी के कब्जे से 330 ग्राम एमडी ड्रग्स (कीमत लगभग 33 लाख रुपए) और एक मोबाइल फोन जब्त किया गया। इस पर एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया गया।

राजस्थान के झालावाड़ से हो रही सप्लाई– पूछताछ में खुला राजस्थान कनेक्शन आरोपी से पूछताछ में खुलासा हुआ कि मादक पदार्थों की आपूर्ति राजस्थान के झालावाड़ जिले से हो रही थी। इसके बाद 28 जनवरी की रात करीब 80 पुलिसकर्मियों की टीम ने ग्राम घाटाखेड़ी थाना डग जिला झालावाड़ में दबिश दी। दो आरोपी मौके से गिरफ्तार दबिश के दौरान आरोपी ताहिर खान के घर पर संदिग्ध गतिविधियां मिलने पर पुलिस ने शाहीर खान (46) और मुनव्वर खान उर्फ राजा (40) निवासी घाटाखेड़ी को गिरफ्तार किया।

ये सामाग्री मिली

मौके से पुलिस ने स्मैक, एमडी ड्रग्स, केटामाइन केमिकल, 25 नशीले इंजेक्शन, सोडियम कार्बोनेट 5 किलो, अमोनियम नाइट्रेट 7 किलो, ड्रग निर्माण मशीन, ड्रम, 7 मोबाइल फोन, एक जैसी नंबर प्लेट, एक भरमार गन और एक एयर गन जब्त की। कुल सामग्री की कीमत लगभग 5 करोड़ रुपए आंकी गई है। राजस्थान पुलिस ने भी की मदद कार्रवाई के दौरान राजस्थान पुलिस का भी सहयोग लिया गया।

पूरे ऑपरेशन को शांतिपूर्ण व योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया गया। पुलिस का कहना है कि इस नेटवर्क से जुड़े अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। आगर मालवा पुलिस जीरो टॉलरेंस नीति के तहत जिले सहित अंतर्राज्यीय स्तर पर भी मादक पदार्थ तस्करों के विरुद्ध लगातार कार्रवाई करती रहेगी।